होटल का पता लेकर उसने वहाँ फोन किया और वापस किशन के पास आकर बोली—"चिन्ता की बात नहीं—अगर मैं कहूँ आपको मेरे यहाँ आज मेहमान बन कर ठहरना होगा तो शायद आपको एतराज न होगा. और हाँ, आपका सामान यहीं पहुँच जाएगा. मैंने ड्राइवर भिजवा दिया है." किशन बुत बना बैठा था.

"जी भला मुझे क्या एतराज !"

रचना ने कहा—"तो फिर उठिये जरा थोड़ा बाहर घूम आयें और अपने घर की चीजों से भी परिचित करा दूँ."

वह दोनों उठे और बाहर की ओर चल दिये. बरामदे के सामने खूबसूरत फूलों की क्यारियाँ और भिन्न-भिन्न प्रकार के कई गमलों में फूल सुसज्जित थे. बँगले के दायीं ओर एक छोटा-सा तालाब था—अति सुहावना, जिसमें सुन्दर बत्तखें तैर रही थीं. पानी इतना साफ था कि भिन्न्-भिन्न प्रकार की मछलियाँ पानी में क्रीड़ा करती साफ दिखायी पड़ती थीं. उसके साथ ही फव्वारा लगा था जिसका पानी उछल-उछलकर देखने वाले को आकर्षित करता. फिर मखमली घास का एक छोटा-सा मैदान जिसके मध्य दो पत्थर की बनी अति सुन्दर मूर्तियाँ विराजमान थीं. मैदान के मध्य दो वृक्ष जो कि बहुत ही ऊँचे व घने थे. मैदान पार करके बायीं ओर वृक्षों का घना झुण्ड था जिसे देखकर यूँ प्रतीत होता था जैसे कोई घना जंगल हो. वृक्षों पर बैठे पक्षी नाना प्रकार की बोलियों में चहक रहे थे. दरख्तों के थोड़ा परे एक पथरीली चट्टान-सी लग रही थी पर उस जगह पर कई प्रकार के रंग-बिरंगे खूबसूरत पत्थरों के ढेर रखे हुए थे. उस तरफ एक गेट लगा हुआ था जो कि बन्द था. गेट के पार एक पगडण्डी बनी थी और रास्ते के दोनों तरफ घने चिनार के वृक्ष थे. गेट के पास पहुँचते ही रचना बोली—"यह रास्ता 'एनशियेण्ट केव' को जाता है. अभी जाना उचित न होगा. इसमें कई युगों की भिन्न-भिन्न चीजें आपको मिलेंगी, जिन्हें बहुत मेहनत करने के पश्चात् मैंने स्वयं बनवाया है. मैंने कहा न एक चित्रकार हूँ. मेरे शौक अद्भुत हैं." कुछ देर पश्चात् दोनों कमरे में वापस चले आए. आते ही रचना ने नौकरानी को बुला कर कहा —"इन्हें 'गेस्ट रूम' दिखा दो"—किशन की ओर इशारा करते हुए कहा

—"आप वहाँ आराम करें, शाम को फिर डिनर टेबल पर मुलाकात होगी." किशन नौकरानी के साथ चला गया. वहाँ पहुँचा तो नौकरानी ने हर वस्तु से परिचय करवाकर कहा—"अगर कोई काम हो तो घण्टी द्वारा सूचित कर दीजिये, आपकी सेवा में कोई उपस्थित होगा." नौकरानी के जाने के पश्चात् किशन कमरे की वस्तुओं का निरीक्षण करने लगा. हर वस्तु उसकी आवश्यकता के अनुसार मौजूद थी. वह बहुत देर लेटा-लेटा रचना के प्रति सोचता रहा.

काफी देर बैठे-बैठे जब किशन का जी कमरे से उकता गया तो वह ड्राइंग-रूम की ओर आया, वहाँ कोई न था. अन्य कमरों को देखने के लिए वह ज्यूँ ही दूसरे कमरे में गया, वहाँ रचना कोरे कागज के बहुत बड़े टुकड़े पर लकीरें लगाने में व्यस्त थी. कमरा बहुत बड़ा था व रोशनी से चमक रहा था. कई प्रकार के चित्र—अति आकर्षक, भावनापूर्ण, कमरे में लगे थे जो कि रचना ने शायद स्वयं बनाये हों.

वह बहुत देर वहाँ खड़ा रहा परन्तु रचना को उसके आने का आभास न हुआ. वह काम में लीन रचना पर टकटकी लगाये था. जब रचना ने आँख से चश्मा उतार कर थोड़ा ऊपर देखा तो किशन को सामने खड़ा देख कर कहने लगी—"ओह ! आप कब से यहाँ खड़े हो, मुझे मालूम न हुआ, बैठो." किशन साथ वाली कुर्सी पर बैठ गया. रचना बोली —"अगर इस समय बात न कर सकूँ तो बुरा मत मानियेगा." और फिर आँखें मूंद कर बहुत देर सोचती रही. किशन की नजर इधर-उधर चित्र-कारी पर जा रही थी. वह आज पहली बार हाथ से उतरी कला का इतना सुहावना रूप देख रहा था. यूँ तो वह भी चित्रकार था, पर इस कला के सामने एक तिनके सामान. उसके हृदय में कला के प्रति आज बहुत समय बाद जागृति आ रही थी. शायद सुभाषनी का अधूरा चित्र उसकी कला का अधूरापन छोड़ गया था, पर आज वह कला के सागर की लहरों में बह उठा. उसने इन्हीं लहरों में डूब जाना चाहा. उसके मन में कला के प्रति स्नेह का सागर उमड़ पड़ा. कई ख्याल उभर रहे थे मानों उसके विचार आज उसके दिमाग को आरी की भाँति टुकड़े-टुकड़े कर रहे हों. इसी बीच रचना ने घण्टी बजायी तो उसके विचार छिन्न-भिन्न

हो गये. घण्टी सुनते ही नौकरानी ने मदिरा का गिलास सोने की ट्रे में ला कर रचना के आगे रख दिया. वह गिलास को आँखें मूंदे एक ही घूंट में निगल गयी. कुछ देर बाद वह अपने-आपसे ही बोल उठी—

"नहीं—नहीं—कुछ समझ नहीं आता !" अब उसकी आँखें खुली थीं. वह किशन की ओर देख कर बोली—"इस तस्वीर का रूप उतारते हुए आज छः महीने हो गये परन्तु मेरी कल्पना हार गयी. मेरे हाथ थक गये, समझ नहीं आता इस तस्वीर का अन्त क्या होगा." किशन कभी तस्वीर पर, कभी रचना के थके-हारे चेहरे पर नजर डालता. कुछ देर के लिए वह मौन-सा सोच में डूब गया. कमरे में सन्नाटा छा गया. किशन के शब्दों ने खामोशी को भंग किया—"इन ममता-भरे हाथों में खंजर, स्नेह-भरे आँचल पे खून के छींटे क्यों ? क्या प्यार-भरी नज़र ममता से भरपूर नहीं ?"

रचना ने भावुकता से कहा—"किशन, तुम ठीक कहते हो, पर ये लाचार नारी के वो हाथ, वह आँचल है जो बदला लेने पर मजबूर हैं."

"रचना जी, आप एक कलाकार हैं—उसकी कल्पना सदा रचनात्मक होती है, विनाश, अत्याचार, क्रूरता की नहीं. सबसे बड़ा बदला इन्सान को अनजान जानकर उसकी भूल को माफ करने और उसके लिए भगवान से अज्ञानता दूर करने के लिए प्रार्थना करने में मिलता है." रचना खामोश उसके चेहरे को देख रही थी. अब अकस्मात् उसके चेहरे पर चमक आ गयी, जैसे कोई वर्षों से खोयी वस्तु अभी अकस्मात् ही मिल गयी हो. उसके होंठ थरथरा उठे—"किशन, तुम महान हो, तुम्हारा रूप ज्ञान की खोज, कला का मन्दिर-सा प्रतीत हो रहा है. काश ! मुझमें ममता-भरी तस्वीर उभार सको !" कुछ देर पश्चात् खाने का प्रबन्ध किया गया. टेबल लग गया, और दोनों ने इकट्ठा भोजन किया तथा काफी समय तक वार्तालाप करते रहे. रात का पहला पहर बीत गया. रचना की आँखों में निद्रा देवी धीरे-धीरे अधिकार कर रही थी और सोने के लिए दोनों ने एक-दूसरे से विदा ली.

किशन की आँखों में नींद कहाँ ? रह-रह कर रचना के प्रति विचार उठ रहे थे. फिर उसके हृदय की दबी अग्नि उसके विचारों को झुलगाती

गयी. रचना के कहे शब्द—"काश ! मुझमें ममता-भरी तस्वीर उभार सको," बार-बार उसके कानों से टकरा कर उसे बेचैन कर रहे थे. इन शब्दों में कोई बहुत गहरा राज था, नहीं तो इतनी महान कलाकार ! उसके मन में रह-रह कर विचार उठ रहा था कि क्यूं न उसी चित्र की रूपरेखा लेकर रातों-रात ममता-भरी तस्वीर उभार दे—परन्तु दूसरा विचार उसे डुबा देता—बेगाना घर—अभी जान-पहचान भी तो अच्छी तरह नहीं. रात गये कहीं देख लिया तो न जाने अपने दिल में क्या विचार करे—परन्तु वह अपने विचार, अपने मन पर काबू न पा रहा था. बेहोशी की हालत में, वह लड़खड़ाता उठा और अन्धकार को चीरता हुआ रचना के स्टूडियो में पहुंचा. धीरे-से दरवाजा खोल कर अन्दर प्रवेश किया और कागज पर हू-बहू उसी रूपरेखा को दया के सांचे में ढालता जा रहा था. ममता की मौन मूर्त, स्नेह की अपूर्व झलक—उसे स्वयं भी इस बात की होश न रही कि यह दीवानापन और पागलों-सा व्यवहार क्यों ! अपनी मनोदशा आज उसके बस से बाहर हो चुकी थी. सुबह का पहला पहर आ पहुंचा, तस्वीर को वह नयी रूपरेखा दे चुका था. फिर कल्पना की गोद में खो गया और बैठे-बैठे नींद की झपक में सो गया.

अचानक रचना की नींद टूटी. वह बिस्तर से उठ कर स्टूडियो की ओर बढ़ी जैसे अचानक उसे कोई नया विचार आया हो और उसे रंगों के प्रतिबिम्ब में अभी ढालना चाहती हो. जब उसने स्टूडियो का दरवाजा खोला तो किशन को ड्राइंग बोर्ड की एक टांग के सहारे लुढ़का नींद में देख कर चकित हो उठी ! जैसे कोई थका-हारा प्रेमी प्रेयसी के इन्तजार में सबकुछ खो बैठा हो ! फिर तस्वीर की ओर देखा—उसी की कल्पना का नक्शा, परन्तु स्नेह-भरे रूप में ! ममता से भरपूर दृष्टि ! यह सब देखकर वह मन-ही-मन पुलकित हो उठी. फिर वह चित्र के पास बढ़ी, उसकी पद-चाप से किशन की आंखें एकदम खुल गयीं. उसकी नजर पास खड़ी रचना पर पड़ी. वह हड़बड़ा कर एकदम खड़ा हो गया और विनय-पूर्वक कहने लगा, "रचना जी, न-जाने यह सब कैसे हो गया ! मैं अपने होश खो बैठा था. मैं भी कला का एक पुजारी हूं—भावों के सागर में एक तिनका बन कर बह उठा—मुझे यूं नहीं आना चाहिए था, आपके

स्टूडियो में. धृष्टता क्षमा करें." रचना उसकी ओर गहरी नजर से देख रही थी. उसने बनते हुए कड़ी आवाज़ में कहा—"बैठ जाओ—यहीं कुर्सी के ऊपर. जानते हो हर गलती की सजा होती है—और वह तुम्हें भी मिलेगी." किशन वहीं चुप बैठ गया. रचना ने जोर की हँसी हँसकर कहा —"किशन, शायद जीवन में पहली बार इतनी लग्न-भरे कलाकार का यह अद्भुत दृश्य देखा है—तुम्हारी कला में अधूरापन है, फरन्तु तुम्हारी लग्न, विश्वास और मेहनत देखकर पूरे दावे से कह सकती हूँ—तुम में एक महान कलाकार की छवि छुपी है, जिसे शायद आज तक कोई अनुभव न कर सका, और पहचान बिन उभार भी नहीं हो सका."—फिर थोड़ी देर चुप होकर कहने लगी—"तुम्हारी कला को मैं उभारूँगी—तुम्हारी लाचार पीठ पर सहारे का हाथ रखूंगी." यह सब सुनकर जैसे किशन खुशी के मारे गूँगा हो गया हो, कोई शब्द मुंह से न निकल रहा था. रचना ने फिर कहना आरम्भ किया :

"तुम्हें नौकरी की तलाश है न; कालेज के समय तुम चित्रकारी के गुरु और दूसरे समय में मैं तुम्हारी गाइड—तुम्हें कला का हर पहलू अध्ययन कराऊँगी."

किशन की आँखों में चमक-सी आ गयी, चेहरा फूल-सा खिल गया और बड़े करुणा-भरे स्वर में बोला—"रचना, आप···आप कितनी महान हैं. मैं आपको कौन-सी उपमा दूं—आप साक्षात देवी का रूप हैं—एक महान आत्मा जिसकी व्याख्या शब्दों के पैमाने में ढालना असम्भव है."

रचना एक विश्वख्याति की चित्रकार ही नहीं, एक सुधारिका व लेखिका भी थी. उसकी लेखनी से कई पीड़ाग्रस्त मनुष्यों के हालात, सामाजिक उपद्रव, धर्म के नाम आहुति, दौलत के हाथ बिकते ईमान के किस्से, शान्ति, प्रेम, दया व नाना प्रकार के लेख प्रसारित हो चुके थे.' 'एनशियण्ट आर्ट कालेज' की प्रिंसिपल व संस्था की मालिक वह स्वयं ही थी. इस कालेज में विश्व के कई भागों से बच्चे, युवक व युवतियाँ चित्र-कला व शिक्षा ग्रहण करते थे. स्टाफ की मीटिंग में किशन की नियुक्ति मंजूर हो चुकी थी. आरम्भ में मासिक वेतन ६०० रुपये व अन्य भत्ते अलग. इस संस्था के अलावा रचना के सूबे-भर में कई अस्पताल, स्कूल,

अनाथाश्रम व अपाहिजों की सहायता के लिए कार्यकर्ता थे. किशन पर दया करने का यह पहला रूप न था परन्तु ऐसे कई भटकते मनुष्यों की सहायता करना रचना का हर रोज का काम था.

रचना को किशन में एक अद्भुत आकर्षण-शक्ति महसूस हुई. एक रोशनी की लौ, जिसके उजाले में शान्ति, प्रेम, कला का विकास, जहाँ अथाह अमृत-रस का भण्डार हो.

किशन रात-दिन एक कर मेहनत से पढ़ता और कालिज के अतिरिक्त समय में रचना से कला का ज्ञान बड़ी दिलचस्पी से ग्रहण करता—कभी-कभी तो दोनों इतने लीन हो जाते कि खाना-पीना सबकुछ भूल बैठते. रचना उसे मेहनत, लग्न व रुचि से हर वस्तु समझाती. रचना का इतना स्नेह देखकर वह उसके अहसानों के बोझ से दबा जा रहा था. वह मन-ही-मन उस देवी की पूजा उतारता, उसके लिए सौ-सौ आशीषें माँगता. हर काम में—हर समय उसकी जबान पर रचना का ही नाम उतरता. स्नेह की असीम, चर्म सीमा ! कई बार किशन ने वार्तालाप में कहा—"आप में माँ-सी ममता, बहिन-सा स्नेह, सहयोगी सा प्रेम बलिदान—आपके किस-किस रूप की आरती उतारूँ, आपको कौन-सी पदवी दूँ" तो रचना पुलकित हो उठती—कहती—"किशन, मुझे किसी पदवी की आवश्यकता नहीं—मुझे अपना एक सहयोगी समझो, केवल रचना ही —कुछ और नहीं एक मामूली रचना"—रचना उसकी मेहनत व लगन से अत्यधिक प्रसन्न थी. वह दिन-प्रतिदिन चित्रकारी में प्रौढ़ होता जा रहा था.

किशन ने घर पत्र डाल दिया कि उसे एक अच्छी नौकरी मिल गयी है और कुछ दिनों में घर आकर माँ को अपने साथ ही यहाँ ले आएगा. आज सुबह से ही वह उदास-सा था. उसे रह-रह कर माँ की याद आ रही थी. रविवार होने के नाते आज छुट्टी थी. किशन से रहा न गया. उसने अपनी मनोदशा रचना से कह दी—"रचना जी, आपको मैंने अभी तक नहीं बताया कि मेरी केवल इस भरे संसार में 'माँ' ही है. अगर आप कहें तो मैं उसे अपने साथ यहाँ बुला लूँ—उसके बिना मेरा दम घुटता-सा रहता है." यह सुनकर रचना के मुँह पर उदासी-सी छा गयी और किसी

सोच में डूब गयी. फिर गहरा साँस लेते हुए कहा—"पगले, तूने आज तक क्यूं नही बताया—आज ही अभी तैयार हो जाओ—कल माँ को ले आना, मुझे काम न होता तो मैं भी तुम्हारे संग अवश्य चलती—तुम्हारे आने तक घर का बन्दोबस्त करवा दूंगी—और हाँ, कार ले जाओ मैं ड्राइवर को सन्देश भिजवा देती हूँ ?" —किशन को यह सुनकर हैरानगी-सी हुई और कहने लगा—"मगर कार की क्या आवश्यकता है"—रचना बोली—तो क्या तुम समझते हो, तुम्हारे लिये भिजवा रही हूँ—पहली बार माँ घर में आ रही है तो क्या उन्हें बस अड्डे पर घुमाते फिरोगे—ये सब किस काम की है."

किशन बोला—"पर आप अपने लिए सफर मे इस्तेमाल करने की इच्छुक क्यो नही ? रचना—?"

"किशन मेरी बात दूसरी है. मैं लोगों में रहकर उन्हें नजदीक से देखना चाहती हूँ, और सफर एक बहाना है इस बात के लिए. अच्छा तुम तैयार हो जाओ—कितने दिनों के बाद किसी को माँ कहने का अवसर मिला है—माँ के हाथों पकी रोटी खाने का मौका—कितना स्नेह व ममता होगी!" कहते-कहते उसकी आँखों के सागर छलक उठे. किशन रचना के करीब गया और उसके गालों पर लुढके आँसू पोंछ दिये और बोला—"रचना जी, लगता है आपके पास भी दर्द, दुःख और पीड़ा का भण्डार भरा है—आप मुझे अपने गमों मे शरीक क्यों नही कर लेती."

यह सुनते ही उसके शरीर में मानों कोई झुनझुनाहट हो गयी हो—उसका रोम-रोम हिल गया. रचना बोली—"किशन, आज मुद्दत बाद किसी नेअपने हाथों से मेरे गम के आँसू पोंछे हैं. अपना स्नेह-भरा आँचल मेरे सामने बिखेर दिया है—लगता है, मेरे साँसों में फिर से ताजगी आ रही है— खैर छोड़ो, वक्त बहुत बड़ी दवा है—सब गमों का मरहम है—गुजरते वक्त के साथ जख्म भी भरते जाते हैं." कुछ देर चुप हो गयी और बोल उठी—"अच्छा, देर मत करो, जल्दी तैयार हो जाओ." प्रतीत होता था किशन से ज्यादा रचना को जल्दी हो, माँ से मिलने के लिए. उसे एकदम तैयार करवाया और जाने के लिए बिदा किया.

० ०

सूरज ढल चुका था. अन्धकार धीरे-धीरे वातावरण पर अपना प्रभुत्व जमा रहा था। किशन की माँ का मन रह-रह कर यह आवाज देता कि उसका बेटा आज अवश्य आयेगा. उसने आज किशन का मन-भाता पकवान बनाकर उसे अलमारी में रख दिया और स्वयं उसके इन्तजार में रास्ते के मोड़ तक चली गयी. काफी देर पश्चात् अन्धकार में एक प्रतिबिम्ब आता दिखाई दियाँ जो कि बड़ी फुर्ती से आगे बढ़ रहा था. जब स्पष्ट रूप से दिखाई दिया तो उसका मन प्रसन्नता से डोल उठा और चेहरा अनार के रंग की तरह खिल उठा. वह किशन ही था. जब मोड़ पर पहुँचा, माँ को वहाँ देखकर हैरान-सा हो गया और बोला —"अरे माँ, तुम यहाँ मेरा इन्त-जार कर रही हो—तुम्हें कैसे मालूम हुआ मैं आ रहा हूँ". माँ ने किशन को गले से समेट लिया और उसकी आँखों को कई बार स्नेह से चूम लिया और फिर एक दृष्टि भर कर किशन की ओर देखा और बोली—"मेरा दिल कहता था, तुम जरूर आओगे". फिर दोनों घर की ओर इकट्ठे चल दिये. रास्ते में किशन ने एक एक करके सारी राम-कथा कह डाली और अपनी मालकिन की तारीफों के पुल बाँध डाले. उसके स्नेह और हमदर्दी का सारा किस्सा कह डाला कि वह कितनी दयालु स्त्री है.

घर पहुँचते ही किशन की माँ ने किशन के पैरों को गर्म पानी से धुल-वाया और तश्तरी लगाकर खाना गर्म करके परोसा और दोनों एक साथ खाने बैठ गये. किशन की माँ ग्रास तोड़-तोड़ कर बेटे के मुख में डालती. कितने दिनों के उपरान्त उसका मन आज खाना खाने को हुआ था. किशन के जाते ही उसकी भूख-प्यास मिट गई थी. खाना खाने के पश्चात् किशन ने सब का कुशल-क्षेम पूछा. फिर अपने बैलों की जोड़ी और बकरे मोती का हाल पूछा. माँ ने उसे बताया कि मोती को बेच दिया है. किशन इस बात को सुन कर हक्का-बक्का सा रह गया और कड़े स्वर में बोला—"मगर क्यूँ माँ". उसकी माँ को मालूम था कि यह सुनकर किशन अवश्य दंग रह जाएगा. उसने कह सुनाया कि उसके आने के उपरान्त सुभाषनी का एक लम्बा-चौड़ा खत आया था. जब एक दिन बकरे को छोड़ रखा था तो बरामदे में रखे खत को टुकड़े-टुकड़े करके चबा लिया जैसे मानों उसका अ

के पुर्जे से उसका कोई पुराना बैर हो. उस दिन मेरे दिल को बहुत दुख हुआ, जब भी बकरे पर नजर पड़ती तो उसे वह बुरा लगता. इसी वजह से उसे घर में न रखा. यह सुनकर किशन को सुभाषनी की याद जैसे नश्तर चुभो गई और उसके जख्मों को कुरेद दिया. वह पीड़ा से बौखला-सा गया. उसके मुखसे कोई शब्द न निकला. आज बहुत दिनों बाद सुभाषनी की पीर ने उसके हृदय को फिर से छलनी कर दिया था.बड़ी देर बाद बोला–"चलो अच्छा हुआ माँ—अगर प्रिय वस्तु रोग बन कर खड़ी हो जाए तो उससे दूर रहना ही ठीक है. उसे भूल ही जाना चाहिए." बात का रुख बदलते हुए फिर बोला–"अच्छा माँ कल सुबह ही चलना होगा, मैं तुम्हें लेने आया हूँ. मालकिन ने आपके लिए कार भेजी है. उसे और ड्राइवर को ऊपर ही ठहरा आया हूँ". किशन की माँ टकटकी बाँधे उसकी ओर देख रही थी जैसे कि कोई नयी सांसारिक वस्तु को उसने पहली ही बार देखा हो. फिर प्यार से अपने बेटे का मुँह गोदी में छुपा लिया और हाथों से उसके सिर को काफी देर तक सहलाती रही. कितना ममतालु होता है माँ का हृदय. किशन उसी दशा में माँ की गोद में लेटा स्वर्गीय आनन्द की हिलोरें लेता रहा. किशन की माँ ने कहा—"बेटा, मगर घर का सारा सामान, इसका क्या होगा ?" किशन ने उत्तर दिया—"माँ, मैंने इसके बारे में सोच लिया है. कमला के सुपुर्द घर को कर जाएँगे. उसके पास रहने को घर भी नहीं है, बेचारी आशीर्शें देगी, दूसरे घर की देखभाल हो जाएगी. हम अपना सामान दो कमरों में डालकर ताला लगा देंगे". घर के सामान को इकट्ठा करने की तैयारी आरम्भ हो गयी. सारा सामान इकट्ठा करके, व जरूरी सामान, कपड़े, जेवर आदि दो बक्सों में बंद करके साथ ले जाने के लिए रख लिया.

जब सुबह हुई तो किशन की माँ की जाने की खबर आग की भाँति पूरे गाँव में फैल गई. सभी महिलाएँ बारी-बारी उनसे मिलने आतीं व दूर तक उन्हें विदा करने आईं. ग्रामीण जीवन में एक ऐसा स्नेह भरा होता है जो हर हृदय को एक-दूसरे के प्रति ऐसे मौकों पर मर्माहत कर देता है. कितना प्रेम था इन भोले गाँववासियों में कि उन्हें विदा करते समय खुशी व विदाई के मिश्रित आँसू छम-छम करते आँखों से रिसकर कपोलों को चीर रहे थे.

कार का ड्राइवर निश्चित स्थान पर पहले से ही इन्तजार कर रहा था. सामान आदि रखवा कर कार में यात्रा का आरम्भ किया. दिन-भर पहाड़ी नागिन की भाँति सड़कों पर कार दौड़ती रही. रात का समय हो गया था. अन्धकार विद्युत की जगमगाहट से कुछ कम प्रतीत होता. जब ड्राइवर ने बँगले के पास जाकर हार्न दिया तो रचना एकदम लान से गेट की ओर भागी जो न-जाने कब से बैठी उनकी राह देख रही थी. कार के आते ही उसकी धमनियों मे प्रसन्नता का दौर-सा छा गया. वह स्वय कार के पास पहुँची और कार का दरवाजा खोलकर खड़ी हो गई. पहले किशन बाहर निकला, फिर उसकी माँ. किशन ने माँ से परिचय कराया—"माँ, यही है वह देवी, जिनका मैंने जिक्र किया". वह माँ की ओर संकेत करते हुए बोला—"रचना,यह मेरी माँ—उपासना है". दोनों आपस में गले लग गईं. रचना ऐसा महसूस कर रही थी जैसे जन्म-जन्म का खोया स्नेह, दर्द व दया ने उसे अपने बाहुपाश मे समेटा हो. उसके हृदय में प्रेम की चिन-गारियाँ तरंग मचा रही थी. मनोदशा एक व्याकुल बच्चे की भाँति थी जो कि भयानक सपने से डर कर अपनी माँ से चिपट गया हो. मार्मिक स्वर मे उसके होंठो से केवल यह निकला—"माँ". यह शब्द सुनकर उपासना की ममता जाग उठी, उसका सीना प्रेम से जैसे फटता जा रहा हो. उसने स्नेह से रचना का मुख चूमा और गले से लगा लिया. कैसे बन्धन हैं—कैसा प्रेम है—कभी अपने भी पराए बन जाते है और कभी पराए भी ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे अपने ही खून के बने हो ! प्रकृति का खेल न्यारा है जिसे समझना बहुत ही मुश्किल है. उपासना ने प्यार-भरी नजर रचना के चेहरे पर डाली और बोली—"बेटी ! जैसा सुना था, तुम कही उससे भी कई गुणा अच्छी हो". बेटी शब्द सुनकर रचना का रोम-रोम हिल उठा, कितने अर्से पश्चात् किसी ने बेटी कह कर पुकारा—अपने गले लगाया, प्रेम-रस का स्रोत उसके अंग-अंग पर न्योछावर किया. इस स्नेह-फुहार से आज उसकी आत्मा चैतन्य हो गयी. रचना उन्हें आदरपूर्वक अन्दर ले गई. किशन को अपने कमरे में जाकर स्नान आदि करने को कहा और स्वयं उपासना के संग स्नानगृह तक गई. सभी सामान व वस्त्र रख दिया और नहाने का आग्रह किया. उपासना नहा कर बाहिर आई तो श्वेत साड़ी में उसका

शरीर एक मूर्त-सा लग रहा था. रचना उसकी ओर टकटकी बांधे देख रही थी—कितना सौन्दर्य, सागर की भाँति गहरी आँखें, आसमान की भाँति फैलाव, एक साक्षात् देवी का रूप—फिर किशन ने कमरे में प्रवेश किया. तीनों कमरे में बैठे आराम से वार्तालाप करने लगे. कुछ समय पश्चात् नौकरानी ने आकर भोजन की मेज सजाने को पूछा, पर रचना ने कहा कि आज वह सब चौके में बैठ कर ही खाना खायेंगे. कितने वर्षों पश्चात् आज इस ढंग का खाना. अपनों में बैठ कर प्रेम-भाव से भोजन एक अर्से के बाद कर रही थी. सभी चौके मे पहुँचे, जमीन पर तश्तरी व बैठने के लिए सामान लगवा दिया गया था. रचना ने स्वयं भोजन परोसने के बर्तन उठाये, और नौकरानी को जाने का आदेश दिया. किशन यह तबदीली देख कर हैरान-सा हो रहा था कि जिसने कभी गिलास तक न हिलाया आज स्वयं भोजन परोस रही है.

रचना ने कहा—"माँ, आज खाना मैं आप लोगों को अपने हाथ से खिलाऊँगी". उपासना बोली—"नहीं बेटी, तुम बैठो मैं खिलाती हूं". रचना—"नहीं माँ, आप भी तो कब से खुद पका कर खुद खा रही हो.आज अपनी बेटी के हाथों से न खाओगी--वैसे फिर रोज मैं अब माँ के हाथों का खाना ही खाया करूँगी". इन शब्दों में कितना अपनत्व था—कितना स्नेह था—उपासना ख्याल में डूब गई मानो वह उसी की बेटी हो—जन्म से बिछुड़े आज मिले हों. खाना आरम्भ हुआ. उपासना ने पहला ग्रास अपने हाथ से रचना के मुँह मे डाल दिया.

खाना समाप्त होने के पश्चात् बैठक में चले गये. काफी देर तक आपस में बातें करते रहे. बीच में रचना ने उनके लिए मकान के प्रबन्ध का जिक्र किया, कि हर वस्तु तैयार है परन्तु विनय-भरी प्रार्थना से कहा—अगर वह उसके ही घर में रहें तो और भी अच्छा होगा—इतना बड़ा बंगला है और फिर रचना का अकेलापन दूर हो जाएगा. उपासना ने यह आग्रह स्वीकार कर लिया.

समय काफी बीत गया था. सोने का प्रबन्ध हुआ. रचना उपासना को शयनगृह की ओर ले गई व किशन भी अपने कमरे की ओर बढ़ गया. सोने का कमरा दिखाते हुए रचना बोली—"माँ, अब लेट जाओ, सफ़र में आप

थक गई होंगी". उपासना ने उसकी ओर एक स्नेह-भरी दृष्टि से देखा और कहा, "बेटी, तुम भी यहाँ क्यों नहीं सो जाती." रचना का मुँह खुशी से झूम उठा और कहा —"माँ, आपने तो मेरे मुँह की बात छीन ली." फिर दोनों पलंग पर लगे तकिये पर लेट गईं. रचना ने उठते हुए कहा—"माँ जी मैं तुम्हारे सिर को दबा दूं. गाड़ी में बैठे-बैठे चक्कर आता होगा." यह शब्द सुनकर उपासना का हृदय डोल उठा. कितना दर्द था उसके हृदय में. वह कहने लगी—"नहीं बेटी, तुम आराम से लेट जाओ." और दोनों लेट गयी.

रात का समय काफी बीत चुका था. रचना की नजर खुले दरवाजे पर पड़ी. बाहर के किसी कमरे की बत्ती जलती हुई नजर आ रही थी. वह धीरे से उठी और बाहर की ओर गयी, जब बैठक में पहुँची तो बत्ती साथ वाले कमरे में जहाँ कि उसका स्टूडियो था, वहीं जल रही थी. उसने दरवाजा खोला तो देख कर विस्मित हो उठी—किशन किसी चित्र की रेखाएँ खींचने में लीन था. यह सब देखकर उसके मन में प्रसन्नता की एक लकीर-सी खिंच गई. इतना मेहनती हो सकता है, कोई दिन-भर सफर से चूर, फिर भी किस विश्वसनीय भावना से वह अपने काम में व्यस्त है !

दरवाजा खुलते ही किशन का ध्यान तस्वीर से हटा. उसने पीछे मुड़कर देखा. 'जरा सोचा, थोड़ा काम कर लूं." रचना उसके मुख पर कड़ी नजर डाले बड़े भाव से देख रही थी. फिर बोली, "किशन, मुझे विश्वास है तुम एक दिन बहुत महान चित्रकार बनोगे. तुम्हारी मेहनत, लगन इस बात का सबूत है. उस दिन मुझे कितनी प्रसन्नता होगी जबकि संसार का बेहतरीन पुरस्कार तुम्हारे तराशे चित्र को प्राप्त होगा. उस रोज मेरी आराधना, मेरी कल्पना सफल हो जाएगी." काफी देर तक वह उसे चित्र पर अंकित लकीरों के सुधार व कला का सही रूप देने का सुझाव देती रही. रात काफी हो चुकी थी. रचना ने किशन को बिस्तर पर जाने का सुझाव देते हुए कहा, "किशन, कला के साथ-साथ तुम्हें सेहत का भी ध्यान रखना चाहिए. जाओ सो जाओ, रात बहुत हो चुकी है."

दिन गुजरते गये. रचना के जीवन में फिर से बहार ने अपना स्थान कर लिया, सन्नाटा दूर हो गया. उसका अकेलापन जो बोझ बन उसके मन

को डुबोता था समाप्त हो गया. इस जीवन से उसका अनुराग जाग गया जिसमें रिश्ते-नाते हों, दुख-सुख बँटाने के लिए अपने हों, जिनके पास दो घड़ी बैठ कर दर्द-स्नेह का अनुभव हो. वह किसी का ख्याल रखे और कोई उसे सुख-दुख में अपनी बाँहों में थाम सके. रचना उपासना के साथ कुछ ही समय में कितनी घुल-मिल गयी थी जैसे वह उसी की औलाद हो. उपासना हर रोज चाव से खाना तैयार करती व तीनों मिलकर भोजन करते. अब रचना कॉलेज के समय भी मध्यावकाश में घर आकर खाना खाती. किसी दूसरे के हाथ से परोसे खाने में उसे आनन्द न आता. वह भी अब घर के काम-काज में रुचि लेती. कितना गौरव है स्त्री के लिए घर का काम सम्भालने में ! उसकी मर्यादा, ममता का एक अमूल्य भूषण जिसे हाथों से निभाकर वह स्वयं फूली न समाती.

रचना में यह अद्‌भुत परिवर्तन देखकर घर के नौकर-चाकर भी प्रसन्न थे कि अब कम-से-कम मालकिन की उदासी तो दूर रहती है. कितना उन्माद, रस, प्रेम उस सुनसान बँगले में आ गया था ! जिसका बाहरी रूप देखने में अनुपम था परन्तु अन्दर गम की परछाइयों ने कब से डेरा जमा रखा था. रचना पूरी मेहनत से जी लगाकर कला के नये-नये अध्याय खोलती.

स्वयं कलम उठाये आज उसे कई रोज हो गये थे, परन्तु किशन की लगी लकीरों की छाप पर निर्देशन देती. कई रातें, कई दिन बिना कुछ खाये, बिना आराम किये दोनों चित्रकारी में लगे रहते. किशन भी बड़ी लग्न से अपनी त्रुटियाँ दूर करने का अभ्यास करता.

कॉलेज के अध्यापकगण व विद्यार्थियों में किशन का बहुत मान हो गया था. कुछ ही महीनों की बात है कि किशन की कला के आगे सभी की चित्रकारी का रंग फीका पड़ जायगा. उसकी कला में भाव व संजीदगी थी. एक अनुपम रूप जिसे देख सभी तारीफों के पुल बाँध देते. कला का सुन्दरतम रूप, कल्पना की ऊँची उड़ान ! यह सब देख कर रचना का हृदय गद-गद हो जाता. सोचती, उसका सपना साकार हो रहा है. किशन की कला उसके जीवन का उद्देश्य बन गयी थी.

रचना ने किशन की चित्रकारी में से बने दो चित्र नैशनल आर्ट

गैलरी में प्रदर्शनी के लिए भेजे और दो चित्र कला अकादमी प्रतियोगिता में. उसे विश्वास था कि वे सभी चित्र प्रशंसा का एक केन्द्र बन जाएंगे—कला का एक अद्वितीय रूप !

शाम को जब किशन स्टूडियो में पहुँचा तो रचना ने कहा, "किशन, आपके बनाए दो चित्र मैंने 'नैशनल आर्ट गैलरी' और दो कला-प्रतियोगिता के लिए भेजे हैं." किशन ने उसके नयनों में एक तेज-सा पाया. कितना अपनापन था ! एक अध्यापक की लालसा, माँ-सी ममता, बहिन-सा स्नेह और एक मित्रता का भाव. किशन ने कुछ देर के बाद कहा—"रचना, आपका जीवन महान है. आपने मेरे लिए कितने कष्ट उठाये हैं ! मुझे कूड़े से उठाकर जीवन की ऊँची उड़ान तक पहुँचा दिया !" कहते-कहते उसका गला घुट-सा रहा था. रचना ने उत्तर दिया—"किशन, यह तुम्हारा मिथ्या वहम है, कोई आदमी किसी के लिए कुछ नहीं कर सकता. यह तो सब तुम्हारी ही ईमानदारी और मेहनत का फल है. हाँ, मैं बीच में तिनके का सहारा जरूर हूँ."

रचना यह कहकर कुछ देर के लिए मौन-सी हो गयी और टकटकी बाँधे किशन की आँखों की ओर देख रही थी. किशन ने रुँधे स्वर में फिर कहा—"रचना जी, एक बात पूछूं ? देखता आ रहा हूँ कि आप जिगर में गहरा दाग छुपाये बैठी हैं. एक दास्तान जो कई बार दिल से उतर कर जुबान पर आने को होती है पर होठों से बाहर नहीं निकलती ! आपके पास इतना सब-कुछ होते हुए भी आप शून्य-सी रहती हैं ! आपने, मेरा मतलब···आप आयु में बड़ी हो चुकी हैं, सभी कुछ है फिर···फिर शादी···?" रचना ने कुर्सी को एक तरफ हटाया और फर्श पर लगे जीने के ऊपर किशन के पास बैठ गयी और बोली—"किशन, मैं आपका मतलब जान गई हूँ. पर मेरे जीवन में मर्द के रूप में जो भी आया वह लोभी, वासना का भूखा—मेरी दौलत का लुटेरा था. जहाँ प्रेम नहीं, स्नेह की महत्ता नहीं, परन्तु एक नाटक-सा अभिनय ! मुझे मर्द जात से नफरत हो गयी है···परन्तु जीवन के हर पल में स्त्री-पुरुष का मिलन ईश्वर की कुछ ऐसी देन है—सम्भवतः पुरुष या स्त्री शब्द एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं." कहते-कहते रचना रुक-सी गयी. किशन उसकी मुख-मुद्रा भली प्रकार देख रहा

था. वह कहते-कहते कुछ गम्भीर व उदास हो गयी थी. बीच में किशन बोल उठा—"रचना, मुझे क्षमा करना, मैंने आपके जख्मों को छेड़ दिया. मुझे महसूस हो रहा है, आपके पहलू में छिपे जख्म हरे होने से आपकी हर साँस को दुख पहुँचा रहे हैं." रचना ने फीकी-सी हँसी हँसकर कहा—"नहीं किशन आज टूटी वीणा के तार हिल ही गये हैं तो उसे अपना राग अलापने दो—सुना है रोकर या किसी को सुनाकर गम दिल से निकलकर कुछ हल्का पड़ जाता है. तुम्हें मैं अपना स्नेह-पात्र न-जाने क्यूंकर समझने लगी हूँ—मुझे आशा है दो घड़ी बैठकर मैं तुम्हें अपने टूटे शब्दों में जीवन-कथा सुना सकूं—मगर इससे पहले मैं दो घूंट नशा कर लूं, कई रोज बाद आज गले से उतार लूं—तुम बैठो मैं बोतल और गिलास स्वयं उठाकर यहीं लाती हूँ." वह उठी और दूसरे कमरे की ओर बढ़ी, पलभर में बोतल, सीडा व अन्य सामग्री आ गई. गला तर करते हुए रचना कहने लगी, "किशन, इस बात का पता माँ को भी न चले." किशन ने कहा—"रचना, शायद आपने मेरी माँ को अभी पहचाना नहीं, वह हर भाव को हकीकत के तराजू में तोलती हैं."

"किशन, तुम ठीक कहते हो. ऐसा ही माँ का रूप देखने को मेरे नयन न-जाने कब से तड़पते थे. पर अब वह कमी भी पूरी हो गई, मैं किसी को माँ कहकर तो पुकारती हूँ ! कितना दर्द है इस छोटे से शब्द—'माँ' में. दुनिया भर को समेटने वाला शब्द—ओह !" उसकी आँखों में आंसू छलक आए, चेहरा रुआंसा हो गया फिर उसने कहना आरम्भ किया—"किशन, जानते हो मैंने अपनी 'माँ' को पहली बार कब देखा था ? जब उसकी अर्थी चिता की ओर बढ़ रही थी—उसका जिस्म शव बन चुका था. अजीब-सी बात है—कुदरत के खेल इंसान की पहुँच से बाहर हैं—सुना है, मेरी माँ अपने समय की सबसे सुन्दर युवती थी. इतना सुन्दर रूप कि शायद···उस वक्त के लोग अभी भी कहते हैं कि ऐसा हुस्न उन्होंने आज तक न देखा—परन्तु जमाने से ठुकराई—दुनिया की नजरों में जलील, पर पर्दे की ओट में जन्नत का वही रूप जिसे हमतुम सभी 'वेश्या' नाम से पुकारते हैं. उसके वेश्या हो जाने का भेद जानते हैं--केवल मैं या वो मर्द जिसने अपना हाथ बढ़ाकर कायर की तरह छुड़ा लिया. वह दोनों प्रेमी थे, पर

वासना के हाथों लुट गए. परिणामत: मैं शरीर धारण करके अपनी माँ के पेट में छा गयी. जब उस युवक को इस बात का पता चला तो उसने एक मधुर चाँदनी रात, नदी में क्रीड़ा करते वक्त, काले इरादे से मेरी माँ को नदी की भयानक लहरों के सुपुर्द कर दिया ! कैसे होते हैं वो लोग, जो इंसान के जीवन का मूल्य इतना कम लगाते हैं !" यह कहते-कहते वह चुप हो गयी और गिलास से दो घूँट और उतार लिए और फिर बोली—"पर किस्मत के खेल न्यारे हैं—मेरी माँ की मृत्यु नहीं हुई, इस बात का अन्दाजा तो आप मेरी पैदायश से लगा रहे होंगे—पर दुनिया ने कितने नश्तर चलाये, क्या-क्या बीती, शायद यह बात तो मैं बता नहीं सकती, पर इतना जरूर ज्ञात हुआ है कि वह सुन्दर ही नहीं, धार्मिक स्त्री थी, परन्तु बेबस जमाने के आगे उसे अपने सौंदर्य की दुकान सजानी पड़ी. जब इन्सान की नेकी मिट्टी के कणों की तरह तूफान के भयंकर झोंकों से छिन्न-भिन्न हो जाए तो शायद शैतान बनना उसके लिए एकमात्र रास्ता रह जाता है. उसके सौंदर्य पर जो भी देखता आकर्षित हो जाता. मधु के लोभी भँवरे खुद ही जाल में फँसते. परन्तु मेरी परवरिश उससे कोसों मील दूर हो रही थी. मेरी माँ की एक बचपन की मित्र थी. मुझे उसी के सुपुर्द कर रखा था ताकि उसके साये से भी दूर रहकर अच्छी तालीम हासिल कर सकूँ. एक सभ्य जीवन व्यतीत करूँ, मुझ पर कोई उँगली न उठा सके ! माँ मेरे खर्च से कहीं ज्यादा पैसा भेजती. जीवन के दिन व्यतीत होते गये, मधुर बचपन यौवन में अँगड़ाई लेने लगा. बचपन की मासूम नजर यौवन-प्रेम-रस के अल्हड़पन में बदलने लगी. मेरा प्रेम अपनी माँ (जिसके पास मैं पल रही थी वह मेरे लिए माँ से कम न थी) के दूर के रिश्तेदार—उसके भानजे से हो गया. मैं प्रेम-प्रवाह में डूब चुकी थी—उसके बाजू मेरे जीवन का सहारा बने मुझे जीवन-पथ पर बाहों में लपेटे आगे बढ़ाते जा रहे थे.

कॉलेज का अन्तिम वर्ष था. एक दिन मैं जब कॉलेज से घर लौटी तो बैठक में एक बूढ़ी उमर की औरत बैठी थी, जिस की उत्सुकतापूर्ण नजर किसी का इन्तजार कर रही थी. मुझे देखते ही बूढ़ी के चेहरे पर जैसे मुद्दत की बिछड़ी खुशियाँ आ गयीं. मैंने उससे कोई बात न की, न ही वह

मुख से बोली, पर मेरी ओर एकटक दृष्टि लगाए बैठी निहारती रही. उसी शाम को पता चला, बूढ़ी बेचारी परलोक सिधार गई—कितनी अजीब घटना थी. दिल को दुःख तो हुआ पर पीड़ा से हृदय उतना ही मर्माहत था जितना कि किसी अजनबी की मृत्यु पर होता है. दूसरे दिन शाम को मेरी माँ मेरे पास आई, उसका चेहरा उदास, मुंह रुंआसा-सा था. हाथ में एक पत्र और कुछ सरकारी कागज थे. उसने पत्र मुझे थमाया और पढ़ने का आदेश दिया. पत्र पढ़ते ही मेरे मुंह से पागलों-सी चीख निकली और वहीं बेहोश होकर गिर गई." कहते-कहते रचना रुक गई. उसने बोतल से थोड़ी शराब उँडेली और एक ही घूंट में पी गई. फिर कहने लगी, "किशन, अपना जिस्म फटता है तो कितना दर्द होता है—ओह ! जानते हो वह औरत कौन थी ? मेरी माँ—हाँ जिसने मुझे जन्म दिया था." कहते-कहते उसकी आंखों के आंसू उसके कपोलों को चीरने लगे. आवाज में थरथराहट व कम्पन आ गई और बच्चों की तरह हिचकियाँ लेने लगी. "ओह ! किशन, मैं कितनी बदनसीब थी, अपनी माँ के गले भी न लग सकी. एक बार 'माँ' कहकर भी न पुकार सकी. उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली थी. पत्र के आखिरी शब्द कितने दर्द-भरे थे, "मेरा संकल्प पूरा हो गया. रचना अब समझदार पढ़ी-लिखी युवती बन गई है. अब मेरे जीवन का खेल खत्म होने जा रहा है, पर दुख इतना रहा जीते, जी—रचना, तुम्हें बेटी कहकर न पुकार सकी—इसलिए कि मेरी ममता जाग उठती. तेरा स्नेह मुझे घेरे में जकड़ लेता. फिर मौत का सामना करना मेरे लिए शायद उतना ही कठिन होता जितना जीवन का. अगर जीती तो दुनिया तुम्हें वेश्या की औलाद कह कर·····?"

रचना काफी देर आँखें बन्द किये मौन बैठी रही. किशन यह दर्द-भरी कथा सुनकर गम के बोझ से दबा जा रहा था. वह सोच रहा था कि आज तक वह स्वयं को ही एक दुखी प्राणी समझता रहा, परन्तु उससे भी कितने दुखी व्यक्ति जीवन की लपटों से झुलसे हैं. रचना ने फिर कहना आरम्भ किया—"किशन, मैं जहाँ पली थी, उस माँ का भी देहान्त हो गया. अब जीवन में एक अकेलापन था. परन्तु मैंने कहा न, एक मर्द की बाहों का सहारा था, उसी सहारे पर जीवन व्यतीत करने लगी. मैंने अपनी

वसीयत की पूरी जायदाद बेच डाली, काफी राशि मिली. मेरा सबकुछ वह नौजवान था.

फिर जानते हो क्या हुआ ? शादी की तारीख तय हुई पर शादी से पहले ही मेरे पेट में हमारे कर्मों का फल अपना रूप धारण कर चुका था. एक तूफान आया—मेरा सबकुछ समेट कर ले गया. नौजवान दौलत के अन्धेपन में गलत रास्ते अपनाता गया. मेरा विश्वास लुट गया. एक रात मेरी दौलत के लिए वह मुझे दूध में जहर मिलाकर अपनी तरफ से सदा-सदा के लिए खत्म कर गया. पर जिन्दगी में अभी और गम देखने थे न, इसलिए जिन्दा रह गयी. मैंने अपनी पाप की गठरी का गला अपने पेट में ही घोंट दिया, फिर क्या-क्या न हुआ—नौकरी की तलाश में भटकी तो भटकती रही. जहां जाती मर्द मेरे दामन को गंदा करना चाहते. मैंने सोचा, अगर यही करना है तो क्यों न माँ के रास्ते को अपना लूं. अब मुझमें कौन-सी नारी-लज्जा बची थी. पाप क्या एक बार किया, क्या बार-बार किया, आखिर है तो पाप ही. बड़े ताज्जुब की बात है—मैं भी एक सौंदर्य की मूर्त की भान्ति नीलामी के मेज पर खड़ी हो गयी." एक वर्ष तक घुट-घुट कर अपनी आत्मा को मार रही थी. एक रात वहां से भागी और यहां आ पहुँची. जहां मुझे न कोई जानता था, न पहचानता. थोड़ा-बहुत जो धन था उससे एक कमरा किराये पर ले लिया. यहां का प्राकृतिक दृश्य देख, मेरी आत्मा फिर से जीवित हो उठी. हृदय में दबी वर्षों की कल्पना फिर जाग उठी. कॉलेज के दिनों में मैं एक अच्छी चित्रकार रही थी. एक बार फिर कलम उठाई—किस्मत का सयोग--मेरे सभी चित्र और कुछ विचित्र संग्रह जैसे हड्डियों के विचित्र पिंजर, अजीब-से पत्थर और मूर्तियां एक दिन विदेश से आई किसी पार्टी ने अच्छी रकम देकर खरीद लिये. उस रकम से मैंने अपना स्टूडियो खोल लिया, और उस के बाद भाग्य सितारे-सा चमक उठा. रातोंरात कला-क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गई. मान, इज्जत, दौलत उफ ! मैं कहां पहुँच गयी."

० ०

समय बीतता गया. समय के बहते प्रवाह के साथ-साथ किशन अपनी कला में प्रौढ़ होता गया. उसके चित्र अब आकर्षण का केन्द्र बन चुके थे. नैशनल

आर्ट गैलरी में उसके चित्रों को बहुत ही सराहना प्राप्त हुई थी. अकादमी कलाप्रतियोगिता में उसके चित्रों को दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त हुआ था. उसके चित्र संसार-भर की विख्यात पत्रिकाओं में छप चुके थे. उन चित्रों को खरीदने के लिए कई देशों से पत्र आते, अच्छे दामों में बिकते. कुछ ही महीनों में उसके कई चित्र उसे काफी रकम दिला चुके थे. वह एक प्रसिद्ध कलाकार बन गया था. उसके फोटो, उसके व्याख्यान, लेख आदि पत्र-पत्रिकाओं में छपते. जब कभी किशन अपने बीते जीवन व वर्तमान के प्रति गहरे भाव से सोचता तो उसे विश्वास न आता कि वह वही किशन है ! एक गरीब-सा विद्यार्थी जो गरीबी में पला जीवन की भट्टी में झुलसता रहा, आज उसके पास क्या न था. धन, दौलत, इज्जत, मान, नेक जिन्दगी सबकुछ ही था. रचना उसके जीवन में एक ऐसी उज्ज्वलता की किरण थी कि जिसके सहारे किशन अपनी मंजिल पर बढ़ता ही गया.

कई महीनों से किशन की माँ बीमार थी. उसका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था. इस बीच रचना ने किशन को ही कॉलेज का भार सौंप दिया था. किशन ही अब उस संस्था का कर्ताधर्ता था. उसके नेतृत्व में काफी उन्नति होती जा रही थी. वह स्वयं भी दिन-रात मेहनत से जी लगाकर काम करता, और जब घर पहुँचता तो माँ की सेवा में जुट जाता.

रचना सब कार्य छोड़कर उपासना की सेवा में लगी हुई थी. उसने शहर के अच्छे-से-अच्छे डॉक्टर बुलाकर इलाज करवाया परन्तु बीमारी अपनी जड़ें दृढ़ता से पकडती जा रही थी. अब तो वह किसी समय बिस्तर से उठ भी न सकती थी रचना हर वस्तु अपने हाथ से खिलाती. उसके वस्त्र इत्यादि स्वयं साफ करके उसे पहनाती. कभी स्वयं उसे लाठी के सहारे धीरे-धीरे उद्यान में सैर कराने ले जाती ताकि उसका दिल बहल जाए. उसे कलम उठाये आज महीने गुजर गये थे, परन्तु इस कार्य से उसके हृदय को आनन्द मिलता. वह अपने आप को एक नारी समझती, एक औरत के कर्तव्य निभाकर—भोजन बनाना, स्वयं परोस कर खिलाना, चूल्हा-चौका करना, सफाई, सब करके उसके हृदय को एक अद्‌भुत शान्ति मिलती. किशन की माँ रचना का इतना सेवा-भरा भाव देखकर विह्वल हो उठती. वह अपने ममता-भरे आँचल में रचना का चेहरा छुपा लेती. उसे

स्नेह से चूम लेती. कई बार कह देती—"बेटी, रचना, अब तो एक आर आरज़ू बढ़ गई है—भगवान से दुआ मांगती हूँ, अगले जन्म तू मेरे घर में ही जन्म ले, मेरी कोख से—ताकि तुम्हारी कुछ सेवा कर ये भार तो उतार सकूँ."

आज आसमान पर घनघोर घटाएँ छायी थीं. बिजली चमक रही थी, बादल गरज रहे थे. दूर कहीं जोर से वर्षा की फुहार गिर रही थी. हवा के तेज झोंके बार-बार दरवाजे-खिड़कियों को खोल देते. रचना ने कपड़े बदले और उपासना के पास जाकर बैठ गयी. बोली—"माँ, आज मैं दूसरे शहर जा रही हूँ. सुना है, वहाँ एक बड़े डॉक्टर बाहर से आये हैं, उन्हें यहाँ लाकर तुम्हें दिखाऊँगी." उपासना ने रचना का हाथ पकड़ लिया और उसे चूम कर कहा—"बेटी, अब मुझे किसी डॉक्टर की जरूरत नहीं—आज रात किशन के पिता स्वप्न में आये थे. उन्हें मेरी जरूरत है, वह मुझे बुला रहे थे." रचना की आँखों में आँसू छलक उठे, पर स्वयं को सम्भालती हुई बोली—"माँ, कैसी बातें कर रही हो." उपासना ने रचना की ओर स्नेह-भरी आँखों से देखकर कहा—"बेटी, अब मुझे जाना ही होगा—मेरे इस मलीन जिस्म में मेरी आत्मा का वास अब कठिन हो चुका है—जीवन-मृत्यु तो साथी हैं—एक के पश्चात् दूसरे की बारी. जो कपड़ा तन पर पहन कर चीथड़े हो जाए तो उसे फेंकना ही अच्छा है बेटी—ताकि नये कपड़ों से तन ढक सकें. वैसे ही आत्मा का एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश आवश्यक है. अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है, मेरी साधना सफल हो चुकी है. मैंने किशन के पिता से ऐसी ही तूफान-भरी रात में इसे एक नेक और बड़ा इन्सान बनाने का वचन दिया था, वह भी तुम्हारे सहारे पूरा कर पाई हूँ." रचना जोर-जोर से हिचकियाँ लेकर बोली, "कितने अर्से के बाद 'माँ' कहने का मौका मिला था—क्या मुझ अभागन को जी भर कर प्यार किये बिना छोड़ जाओगी? माँ···माँ···माँ!" वह उपासना के सीने से लगकर बच्चों की तरह रोने लगी. उपासना ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटी, अगर तुम हिम्मत छोड़ दोगी तो जो जिम्मेदारी मैं तुम्हें देने जा रही हूँ—उसे कैसे सम्भालोगी." कुछ मौन के बाद फिर उपासना बोली, "रचना, मेरे बाद किशन का ख्याल रखना, उसे मैंने बड़े

दुखों से पाला है. बेटी, एक लालसा रह गयी, जीते जी किशन की दुल्हन का मुंह देख जाती तो कितना अच्छा था !" रचना अपना सन्तुलन खो बैठी थी. ऐसी अवस्था देखकर वह घबरा उठी थी. वह जल्दी से उठी और किशन को फोन कर जल्दी घर बुलवा लिया.

किशन के पहुँचते ही रचना उसे कहकर स्वयं डॉक्टर लाने चली गई. किशन माँ के पास बैठा माथा दबाता रहा. उपासना किशन की ओर टकटकी लगाये देखती रही पर उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकल रहे थे. उसके हृदय में कितने तूफान उठ रहे थे. "हाय ! मनुष्य का भाग्य, लगे-लगाए उद्यान को छोड़ कर ऐसे सफर के लिए जाना जहाँ से वापिस कोई भी न आ सका." कितनी दर्द-भरी बात है. आज ऐसा समय आ गया कि उपासना अपने हाथों से सींचे पौधे को छोड़ कर चली जाने वाली थी. फिर उसकी आँखों से दो आँसू लुढ़क गए. उसने किशन को छाती से लगा लिया और काफी देर तक टकटकी लगाये देखती रही. उसके होंठ कुछ कहने को हिले, "किशन बेटा, जीवन एक कठिन अग्नि-परीक्षा है. कोई चिन्ता न करना मेरी. एक बात और—जो दूसरों के हितों की रक्षा करे उसकी पूजा, उसकी सेवा सबसे बड़ी भक्ति है."

आज भी वैसा ही भयानक तूफान था जो कि एक दिन उपासना के जीवन से सबकुछ छीन कर ले गया था. जोर से बादलों की गर्जना हुई. बिजली की ऐसी कठोर धार चमकी जैसे मानों पृथ्वी को चीरने पर तुली है. हवा का एक झोंका जोर से आया और देखते ही देखते उपासना का जीवन-दीप बुझ गया. उपासना की गर्दन किशन की गोद में लुढ़क गयी. किशन के मुंह से चीख निकली. कमरा सिसकियों से कंपकपा रहा था. कितनी दर्द-भरी आवाज थी.

रचना डॉक्टर को लेकर जब घर पहुँची तो उसने जो देखा उसे विश्वास न हो रहा था. वह पत्थर-सी बनी कमरे की ओर देख रही थी. वह एकदम दौड़कर आगे बढ़ी और उपासना के पाँव से लिपट कर सिसकियाँ भरने लगी.

० ०

रचना अब एक चित्रकार ही नहीं बल्कि एक औरत भी थी. रचना का

परिवर्तन देखकर सब चकित थे. एक औरत सा फर्ज निभाकर वह किशन के लिए माँ, बहन, मित्र सबकुछ थी. वह स्वयं भी इन स्नेह के कच्चे धागों का विचित्र सम्बन्ध आज तक न समझ पाई कि वह क्योंकर इन बन्धनों में कड़े रूप से बन्धी जा रही है. रचना, जो कभी अपना चाय का प्याला उठाकर इधर से उधर न रखती. आज हर कार्य स्वयं करती और जितना अधिक कार्य करती उतना ही उसका हृदय प्रफुल्लित होता.

कभी-कभी रचना नौकरानी के नन्हें बच्चे को स्वयं नहलाती—उसके वस्त्र बदलती, उसकी आँखों में काजल डालती, प्यार से पुचकारती. जब कभी घर के काम से निवृत्त होती तो बाग में फूलों को पानी देती और उनकी देखभाल करती—घर की सजावट आँगन की सजावट, सबकुछ स्वयं देखती—फिर समय मिलने पर अपने स्टूडियो में जाकर सामान ठीक करती और रंग की लकीरें कागज के कोरे वक्षस्थल पर, उसे सजीव करने के लिए, आकृति देने के लिए फेरना आरम्भ करती. वह कई दिनों से एक बहुत ही सुन्दर व भावुक चित्र पर काम कर रही थी, परन्तु कई महीनों से उसे पूरा न कर पाई थी. इस बात की उसे जरा भी परवाह न थी कि उसकी कल्पना कई रोज से अधूरी पड़ी है—जब भी स्टूडियो में किशन की चित्रकारी, व मूर्तिकला पर नजर डालती तो उसके हृदय में प्रसन्नता की किरणें फूट पड़तीं—जैसे उसे कोई बहुत बड़ा खोया हुआ कीमती खजाना मिल जाता. आखिर वह भी तो उसी की मेहनत का फल है ! उसी की कल्पना का रूप ! किशन के हाथ से उतरी कला को जन्म केवल उसी ने तो दिया था ! जब वह उन चित्रों को देखती जो कि संसार-भर की पत्रिकाओं में प्रदर्शित हो चुके थे, जिनके लिए किशन को मान-भरे पुरस्कार मिले थे तो उसकी आँखों में बड़प्पन छा जाता, हृदय में मान भाव पैदा हो जाता—यह सबकुछ उसी ने ही तो किया है.

रचना किशन का इन्तजार करके साथ-साथ खाना खाती. स्वयं मेज पर खाना लगाकर अपने हाथों से परोसकर उसे देती—और शाम के समय दोनों घूमने के लिए निकलते. कई बातों पर उनकी बातचीत चलती—कभी कला, उद्योग, कभी मानव जीवन, तो कभी युद्ध-शान्ति पर टिप्पणी. किशन भी अपने दुखों को धीरे-धीरे भूलता जा रहा था, रचना का साथ

उसके लिए एक दैवी रूप से कम न था. कई बार वह अपने जीवन के प्रति सोचता था कि आज वह कहाँ से कहाँ पहुँच चुका था. यह केवल रचना का ही वरदान था. जब यह सब बातें सोचता तो उसका सिर रचना के अहसान से झुक जाता.

रचना ने अपने कालेज का अधिकारी प्रिंसिपल सबकुछ किशन को ही नियुक्त कर दिया था और किशन भी बड़ी मेहनत से अपनी जिम्मेदारी निभा रहा था. दिन-भर कालेज में जी भर के काम करता, कालेज की उन्नति के लिए योजनाएं बनाता, स्टाफ की छोटी-बड़ी हर मुश्किल में उनकी मदद करता और विद्यार्थियों को कला से सम्बन्धित हर बात समझाता—यह केवल स्कूल ही न था पर उन सबका घर, जहाँ प्रत्येक सदस्य परिवार की भाँति मिल-जुल कर रहता और अपना-अपना कार्य बड़ी निपुणता से निभाता. इस परिवार का एक ही ध्येय था कि कला में हर प्रकार की जागृति हो. बीच-बीच में रचना भी स्कूल में आती और विद्यार्थियों के लिए मिठाई, फल आदि उपहार भेंट करती, उनकी कठिनाइयों को सुनती, उनके कार्यक्रम पर सुझाव देती और विद्यार्थियों को स्नेह-भरे शब्दों से उत्साहित करती. अगर उसके विचार में कोई कार्य ठीक न रहा हो तो किशन को अपनी अनुमति और आदेश देती.

नित्य की भाँति दोपहर का खाना खाकर किशन स्कूल में चला गया. काफी देर काम करने के उपरान्त अब उसका मन उकता गया तो जरा बाहिर निकल कर खड़ा हो गया. सूर्यदेव की डूबती किरणों का दृश्य हर वस्तु को सुनहरी रंग में रंग रहा था. बहुत ही मनमोहक दृश्य था. दूर पर्वत-मालाएं चमक रही थीं. घाटियों पर बने मकानों से रिस कर धीरे-धीरे धुआँ शाम के वातावरण में मिल रहा था. किशन का मन बाहिर घूमने को हुआ—वह दफ्तर की ओर बढ़ा और टेलीफोन उठाकर नम्बर डायल किये. दूसरी ओर से आवाज आई तो वह बोला—"हैलो रचना, गुड-ईवनिंग—वातावरण बहुत ही सुहावना है. इस खूबसूरत माहौल में मेरा मन जरा घूमने को कर आया है, क्या आप मेरे साथ नहीं चलोगी". दूसरी ओर से रचना ने उत्तर दिया,"हैलो, गुडईवनिंग किशन, वैसे तो खुली हवा और कुदरत की गोद में घूमने का बहुत चाव है; पर आज न आ सकूँगी"

"क्यों कोई खास बात है ?" किशन ने पूछा. रचना ने उत्तर दिया—"नहीं किशन, खास बात नहीं, पर जानते हो तुमने कल कहा था, सरसों का साग, दही-भल्ले और मिस्सी रोटी खाये बहुत देर हो गयी है, मैं आज ये अपने हाथ से बना रही हूँ". किशन ने गम्भीरता से उत्तर दिया—"ओह अच्छा'. रचना फिर बोली—"माफ करना किशन, बुरा न मानना, शाम को लौटने पर मुझे सुना देना कि इस खूबसूरत माहौल मे क्या-क्या देखा—मैं समझूंगी आपके साथ ही थी—हूँ—अच्छा." और टेलीफोन रख दिया. किशन वहीं खड़ा सोच रहा था कि रचना उसकी छोटी-छोटी बातों का भी कितना ध्यान रखती है. उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गयी और होठों से शब्द निकले—"न-जाने कौन-से जन्म में इस देवी-सी मूर्त के अहसान चुका सकूंगा."—और बाहिर की ओर चला गया. गैरेज से कार निकाल कर धीरे-धीरे गाँव की ओर बढ़ने लगा. तेज हवा के सुहावने झोंके उसके बदन को चूम कर अनोखी सरगम पैदा कर रहे थे. हरी-हरी खेतियाँ, पर्वतों पर श्वेत बर्फ-मालाएं, आकाश में उड़ते पक्षियो की मधुर ध्वनि, शाम के शीशे मे ढला शान्त वातावरण कितना मनमोहक था. किशन प्रकृति के इस अनमोल खजाने को देखकर प्रसन्न हो रहा था. उसने दरिया के किनारे ... पर कार को खड़ा किया और बाहर निकल कर झूमते कदमों से पानी के बहाव की ओर बढ़ने लगा. पानी की स्वर-ध्वनि बहुत ही सुरीली थी जैसे कोई दूर मीठी-मीठी बांसुरी बजा रहा हो, फिर एक ऊँचे पत्थर पर बैठकर दृश्य को बड़ी गम्भीरता से देखने लगा जैसे कि वह इसकी तस्वीर अपने मस्तिष्क में खेंच रहा हो. जब उसने नजर पीछे मोड़ी तो उसे एक आधुनिक ढंग की युवती जिसके बाल कटे हुए, योरुपियन ढंग का लिबास पहने और भारतीय ढंग का अति मुलायम व सुन्दर चेहरा, उसके साथ एक नवयुवक जो काले रंग की कोटी पहने देखने में हृष्ट-पुष्ट, आधुनिक ढंग का जचता था—दोनों युवक-युवती बाहों मे बाहें डाले मुस्कराते हुए आपस में बातें करते किशन के सामने से गुजर गये. जब तक वह उसकी आंखों से ओझल न हुए एकटक बांधे, गम्भीरता से उनकी ओर देखता रहा. आज कितने समय के उपरांत उसके हृदय में सुभाषनी की छुपी यादों की ज्वाला विस्फोट बन कर भड़क उठी. उसे अपने बीते दिनों की तस्वीर नजर आ रही थी. वह

और सुभाषनी भी तो इसी तरह मुस्कराते हुए समय व्यतीत करते थे. यादों की माला उसके मस्तिष्क में दर्द-भरी पीड़ा बन कर घूमने लगी. वह वहीं शिला बना बैठा रहा, जैसे उसके जिस्म को बिजली कौंधकर चीर गई हो. उसके हृदय में कितना दर्द उठ रहा था कि मारे पीड़ा के न तो कराह ही सके और ही दर्द सह सके. उसकी हृदय-ध्वनि की हर धड़कन जैसे शबनम-भरी वादी के शोले बरसाती जा रही हो—प्रेमपीड़ा का कितना दर्द होता है कि इन्सान के लिए सह लेना शायद मौत से भी ज्यादा दुखदायी हो. किशन के मुस्कराते होंठ पलभर में ही पुराने खण्डहरों में पड़ी दरारों की तरह फट गए, आंखों की चमक पलभर में ओझल हो गई, मुंह पर उदास घटायें उमड़ने लगीं. उसे अब सारा वातावरण फीका-फीका नजर आ रहा था. शाम की ढलती रोशनी पर रात का अन्धेरा इस प्रकार छा रहा था जैसे उसके प्रेम के ऊपर समाज की झूठी दौलत का अन्धकार-भरा साया छा गया था. दरिया का बहता झरना भी मानों उसकी उदासी में बहुत गम-गीन सरगम पैदा कर रहा हो. "कैसे-कैसे हैं दुनिया के कांटों-भरे रास्ते." उसके उदास मुंह से शब्द निकले. वह उठने का प्रयत्न कर रहा था पर उसे यूं लगा, उसके शरीर से आत्मा निकल गई हो, अरसे के रोगी की तरह धीरे धीरे कदमों को बढ़ाते हुए कार तक पहुंचा स्टेरिंग पर मुंह औंधा किये कितनी ही देर बैठा रहा. अब अन्धकार छा चुका था, सड़क पर गुजरते यात्रियों की आवाज ने उसे चौंका दिया. उसने आंख उठा कर देखा तो मकानों में अब बत्तियां जल चुकी थीं. उसके मुंह से गम्भीर शब्द निकले—"किशन, जीना तो पड़ेगा तुझे—अपने लिये नहीं—तो दिये की तरह अपना तन जलाकर कम-से-कम दूसरों को तो कुछ उजाला दो". उसने कार स्टार्ट की और धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ने लगा.

अभी तक गेट खुला ही था, कार को धीरे-से निकाल कर उसने गैरेज के पास खड़ा कर दिया और धीरे-धीरे बरामदे की ओर बढ़ने लगा. बरामदा हल्की-सी बिजली की रोशनी से जगमगा रहा था. दबे पांव उसने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया और कोने की ओर बढ़ा और दरवाजा खोलते हुए दूसरे कमरे में बार की ओर गया—वहां से स्कॉच की बोतल व कुछ सोडे की बोतलें उठाईं और स्टूडियो की तरफ लपका. एकदम दरवाजा

बन्द कर दिया और पाँव फैलाकर आराम-कुर्सी पर बैठ गया जैसे बहुत ही थका-हारा हो, फिर बोतल का ढक्कन उतार कर करीब आधी बोतल एक ही साँस में पानी की भाँति उसने अपने मुँह में उँडेल ली—आज उसे कोई होश न था कि वह क्या कर रहा है, क्या नहीं. सिगरेट सुलगा कर आँखें छत की ओर करके बैठा रहा. धुआँ धीरे-धीरे ऊपर उड़ रहा था, उसी तरह सुभाषनी का ख्याल उसके दिमाग को चारों दिशाओं से घेर कर उस गुजरे समय की धुँधली याद, उड़ान की लपेट में ऊपर ही ऊपर ले जा रहा था. उसके मुँह से भर्राए हुए स्वर में शब्द निकले—"सुभाषनी, मैंने तुम्हारा क्या बुरा किया था, मेरे जवानी-भरे दामन में शोले भड़का कर तुम्हें क्या खुशी मिली ?" और कमरे में पड़े चित्रों की ओर बडी भावुक गम्भीर टकटकी लगाए देखने लगा. उसके स्वर में दर्द-भरी आवाज थी और भाषा मे रुँआसापन, उसकी आँखें आँसुओं से छलक आयी थीं—"तुम्हें मेरी चित्रकारी से प्यार था न—देख सकती हो तो देखो—आज मैं कितना बडा कलाकार बन गया हूँ. दुनिया-भर में मेरे चित्रों के चर्चे हैं." उसने एक तस्वीर उठायी और फिर जोर से फर्श पर रख दी—"आह—आ—आह, यही है वो तस्वीरें जिनसे मुझे बड़े-से-बड़ा मानपत्र मिला है; यही है वो रंग, जिन्होंने आज मेरी शान्ति लूटी है—काश ! तुमने मेरे रंगों से प्यार न किया होता—मैं भी कितना बदनसीब हूँ—भगवान दिल तो तुमने मुझे दिया परन्तु धड़कनें छीन लीं."

उसके दिल में सुलगती आग आज ज्वाला बन कर भडक उठी थी जिसकी ऊष्णता से आज वह जला जा रहा था. फिर वह जोर से कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथों में मुँह को छुपा लिया. कमरा उसकी सिसकियों से गूंज उठा. उसने हाथों को मुँह से हटाया और धीरे-से बोल उठा—"ठीक है सुभाषनी, इसमें तुम्हारा क्या दोष—तुमने तो मुझ पर अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया था, पर मैं इस काबिल कब था. मैं एक गरीब था न; तुम्हारे काबिल न था—दुनिया के झूठे रस्मो-रिवाज, बाहरी ठाठ-बाट खरीदने के लिए मेरे पास सोने की कीमती मोहरें कहाँ थीं—मेरे पास तो सिर्फ प्यार-भरा सच्चा दिल था—क्या दिल से भी कभी कोई अमीरों के दिखावे खरीद पाया है—ओह ! आज तक कितने ही

हीर-रांझे इस दौलत के व्यूह-चक्र में दम तोड़ चुके हैं." उसका स्वर धीमा पड़ गया और आवाज में काफी गम्भीरता थी. धीरे-धीरे वह अपने मन का दुखड़ा अपने आपसे ही कहे जा रहा था—न-जाने कब तक ये दुनिया हकीकत पहचान सकेगी—स्टेज पर नाचने वाली नर्तकी के बाहरी नाच को सभी देखते हैं. पर उसके दिल में तूफान-भरे भावों को कोई पहचान सका है?"—किशन कमरे में बैठा अपने-आपसे कई सवाल पूछता और उन्हीं के उत्तर भी स्वयं देता जा रहा था. उसके भाव ज्वार-भाटा बनकर उसके दिल में उथल-पुथल मचा रहे थे कि दरवाजे के खटखटाने की आवाज आयी. आवाज ने किशन को चौंका-सा दिया. रचना दरवाजे के बाहर खड़ी दस्तक दे रही थी—"किशन, दरवाजा खोलो न." आवाज सुनकर किशन एकदम कुर्सी से उठा और अपनी आंखों व मुंह को रूमाल से साफ किया और धीरे-से दरवाजा खोल दिया. रचना ने कमरे में प्रवेश किया और किशन की ओर देख कर बोली—"किशन, क्या बात है, यूं कमरा बन्द करके क्यूं बैठे हो ! अरे आपकी तो आँखें भी लाल हैं—कहो तबियत तो ठीक है न." रचना की नजर स्कॉच की बोतल पर पड़ी, फिर फर्श पर पड़ी तस्वीरों पर, यह सबकुछ वह बड़ी हैरानी से देख रही थी; उसने धीरे-से चित्रों को उठाया और किनारे पर रख दिया और धीरे-से बोली —"महसूस कर रही हूँ, आज तुम अपनी जिन्दगी से ही नहीं परन्तु अपनी चित्रकला से भी परेशान हो." किशन ने नजरें झुका लीं, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या उत्तर दे, उसने बड़ी धीमी आवाज में कहा —"नहीं रचना, ऐसी बात नहीं है." रचना उसकी ओर देख रही थी और उसकी मनोदशा का अध्ययन कर रही थी—"किशन, तुम परेशान तो जरूर हो—खैर छोड़ो, बीती बातों को जितना याद करो उतना ही दुःख होता है. आओ चलो हाथ-मुंह धोकर खाना खा लो—आज आपका मनपसन्द भोजन बनाया है मैंने."

किशन वहीं बुत बना खड़ा था जैसे उसे कुछ सुनायी ही न दिया हो. किशन के मुंह से शब्द निकले—"रचना, मैंने आज खूबसूरत माहौल में क्या-क्या देखा, नहीं सुनोगी." रचना के मुंह से निकला—"ओह ! किशन, हाँ, मैं तो भूल ही गयी थी—सुनाओ तो." किशन ने हाथ का संकेत करते

हुए कुर्सी पर बैठने को कहा. रचना कुर्सी पर बैठ गयी और पास ही किशन दूसरी कुर्सी पर बैठ गया. किशन ने धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया—"रचना, बड़े आश्चर्य की बात है—आज जिस तरफ भी मेरी निगाह उठी कुदरत की तरह हर चीज में मुझे सिर्फ एक ही चेहरा नजर आया और वो चेहरा—" किशन चुप हो गया. रचना ने उसकी बात को दोहराया—"हाँ किशन, तुम ठीक बोलते हो, कभी-कभी कुदरत के रंगों में रंगी हर चीज, ऐसे रंग में नजर आती है जो किसी का प्रियतम रंग हो." रचना की नजर बोतल पर पड़ी, वह धीरे-से उठी और दो गिलासों में बोतल उँडेलने लगी. कमरा बिल्कुल शान्त था पर शराब के गिरने की आवाज मध्यम स्वर में गूँज रही थी. रचना ने गिलासों में सोडा मिलाकर एक गिलास किशन की ओर बढा दिया और दूसरा स्वयं उठा लिया.

आज कितने ही दिनों पश्चात् भरे जाम को रचना ने हाथ लगाया था. वह गिलास की ओर देख मुस्करा कर बोली—"अपने ही ख्यालों से परेशान इन्सान के लिए, बनाने वाले ने यह कितनी बेहतरीन दवा बनायी है." फिर खामोश हो गयी. उसने दाएँ हाथ से गिलास उठाया और बोली —"चीयरज किशन." और एक हल्का-सा घूंट गले से उतार लिया. किशन ने भी गिलास से घूंट भरना शुरू किए, फिर किशन के स्वर से कमरा गूँज उठा—"रचना, मैं कह रहा था न—सारी कुदरत मे जानती हो मुझे किसका चेहरा महसूस हुआ. रचना, मैं एक लड़की से प्रेम करता था—उसने मुझसे अपना आप छीनकर मुझे जिन्दगी का सबसे हसीन धोखा दिया ..."अभी बात पूरी न हुई थी कि रचना बोल उठी—"किशन, ये तुम्हारी गलतफहमी है, न-जाने सुभाषनी को किन मजबूरियो का सामना करना पड़ रहा होगा, औरत का दिल इतना संगदिल नहीं होता है." जब किशन ने रचना के मुँह से सुभाषनी का नाम सुना तो जैसे उसके पाँव तले से फर्श खिसक गया हो. उसका मुँह लटका रह गया. गिलास हाथ में ही जम गया, आँखें पथरा गयी हों. कुछ देर पश्चात् धीरे से बोला—"रचना, तो क्या आप सुभाषनी और मेरे प्रेम के बारे में सब जानती हो ?" रचना जवाब में चुप रही, उसने गिलास से एक घूंट भर लिया. किशन बोला—"परन्तु रचना, आपने आज तक मुझसे इस बात का इजहार न किया." इतना कह

किशन खामोश हो गया. उसके दिमाग में ख्याल उठ रहा था, रचना न-केवल समझदार ही है परन्तु एक भावुक है, दयालु और सागर से विशाल हृदय है उसके पास. रचना खामोश ही बैठी थी. उसने सिगरेट का पैकेट उठाते हुए एक किशन की ओर किया. किशन ने सिगरेट निकाल ली और दूसरा सिगरेट अपने होंठों से लगा लिया. फिर लाईटर जलाकर किशन की सिगरेट सुलगा कर अपनी सिगरेट सुलगायी और जोर से धुआं खींचते हुए बाहर छोड़ दिया. कुछ समय पश्चात् बोली, "किशन, ये तो बहुत मामूली बात है, इस दिल में न-जाने और कितनी ही दर्द-भरी बातें, कितने ही राज छुपे हैं."

वह सिगरेट का धुआं धीरे-धीरे निगलती और छोड़ देती—"किशन, जैसे ये सिगरेट धीरे-धीरे जल रहा हैन, उसी तरह मैं भी धीरे-धीरे जलती चली आ रही हूँ, पर फर्क इतना है, सिगरेट का धुआं तुम देख पा रहे हो, पर मेरी जलन का धुआं कोई नही देख पाता." इतना कहकर वह खामोश हो गयी. किशन बातों को ध्यान से सुन रहा था, उसकी एक-एक बात में गहरा मतलब छुपा हुआ था, जिसको किशन समझने का प्रयत्न तो करता परन्तु अपने प्रयत्न में असफल रह जाता. "किशन एक बात कहूँ"—रचना बोली. "हूँ बोलिये"—उसने सिगरेट की बची हुई राख को एशट्रे मे डाला और उसकी ओर देखते हुए बोली—"किशन, ये बची हुई राख है न, इसका कोई फायदा नही; परन्तु ये राख सिगरेट की जलन की यादगार है; यादगार का इन्सान की जिन्दगी से घना सम्बन्ध तो जरूर है परन्तु सिर्फ यादगार के सहारे जीया भी तो नही जाता. जीने की हकीकत जिन्दगी है—बताओ अगर कोई चाहे कि यह राख फिर सिगरेट बन जाए, तो बन सकती है ? नहीं बनेगी; इसी तरह याद महज याद ही रहती है, हकीकत नही बन सकती—जो आदमी ठोकर खाकर गिर जाता है उसके पास से गुजरने वाले मुसाफिर उसकी बेबसी पर तरस तो खाते हैं, पर सहारा बहुत कम देते हैं. सब उसके करीब से दिल में मुस्करा कर गुजर जाते हैं, यह कहते हुए, भगवान आपका शुक्र है मैं इसकी तरह बेबस तो नही हूँ. अगर गिरा हुआ इन्सान हौसला करके न उठे, वहीं गिरा रहे तो तड़प-तड़प कर वहीं दम तोड़ देगा, वक्त आगे निकल जाएगा पर वो पीछे

रह जाएगा, उसकी जिन्दगी वहीं खत्म हो जाएगी···परन्तु जिन्दगी के रास्ते बहुत अजीब हैं. किशन, हो सकता है, जिन्दगी के किसी मोड़ पर तुमको उससे भी अच्छा, बेहतरीन हमसफर मिल जाए." अभी रचना बोल ही रही थी कि किशन बीच ही में बोल उठा—"रचना, तुम जो कह रही हो ठीक है पर सुभाषनी से बेहतरीन हमसफर मुझे कहीं भी नहीं मिल सकता, मैं इतना जानता हूं." कहते-कहते उसकी आंखें तर हो गयीं, मुंह पर उदासी छा गयी और बेसहारा बच्चों की तरह सिसकियां भरने लगा. उसकी आंखों से आंसू टप-टप गिरने लगे. रचना से आंसुओं की धारा देखी न जा रही थी, उसने लम्बा ससकार भरते हुए कहा—"किशन, तुम्हें मेरी कसम, तुम्हारा एक-एक आंसू मेरे कलेजे को चीरता जा रहा है. अपना दिल न दुखाओ."

रचना ने अपना हाथ उठाकर उसके कपोलों पर रख दिया और आंसुओं की बहती धारा को पोंछने लगी, उसके मुंह से धीरे-से शब्द निकले—"किशन, काश ! तुमने किसी के दिल की धड़कन को पहचाना होता, औरत के दिल के आईने में गौर से झांक कर देखा होता !"

कहते-कहते रचना की आंखें तर हो गईं और दो बूंद मोती टपक पडे. किशन को यह शब्द बाण की तरह चुभते जा रहे थे जैसे कि गहरे तालाब के खडे पानी में कंकर फेंकने से एक के बाद एक तरंग उठती है और दूर किनारे तक हलचल मचाती चली जाती है उसी प्रकार रचना के ये शब्द उसके हृदय में हलचल मचा रहे थे. किशन रचना की आंखों में शायद आज पहली बार आंखें डाल कर देख रहा था. उसे रचना की आंखों में छुपे भाव स्पष्ट रूप से नजर आने लगे. रचना भी बेसुध होकर उसकी आंखों में देखती रही. दोनों एक-दूसरे को देखे जा रहे थे जैसे कोई अचानक हमख्याल, मनपसन्द अजनबी आज पहली बार मिले हों—कुछ देर के लिए जैसे वायु थम गई हो—वक्त रुक गया हो, वायुमण्डल जम गया हो. रचना का हाथ किशन के कपोलों पर वहीं रुक गया था, उसकी धमनियों में चलते रक्त की रफतार जैसे तेज हो गई हो. पूरा कमरा बिल्कुल शान्त हो गया था, उनके सांसों की आवाज, दिल की धड़कन, प्रत्यक्ष रूप से साथ-साथ चलती सुनाई पड़ रही थी.

रचना के हाथ का स्पर्श किशन को आज अद्भुत-सा लग रहा था. फिर किशन ने धीरे से रचना का हाथ कपोलों पर से हटा कर अपने हाथ में ले लिया. दोनों बुत बने एक-दूसरे को देखते रहे. जब किशन ने रचना का हाथ थामा तो उसके बदन में जैसे बिजली की तरंग चली गयी हो और वही किशन का हाल था. किशन के मुंह से शब्द निकले, "रचना, क्या मेरी जिन्दगी का बोझ उठा सकोगी?" यह शब्द सुनकर रचना को जैसे दोबारा होश आया हो. रचना ने अपनी आंखें झुका लीं, किशन अब तक रचना का हाथ थामे ही था. उसने बड़े दुखी स्वर में कहा—"रचना, मैं ठोकर खाकर गिर चुका हूं. अब मुझमें इतनी हिम्मत नहीं मैं उठ सकूं. मुझे सहारे की जरूरत है, क्या सहारा न दोगी ?" यह शब्द सुनकर रचना का जैसे रोम-रोम डगमगाने लगा हो, कलेजा थरथरा रहा हो. उसने फिर आंखें उठाईं और किशन की ओर देखा. वह बुत बना वैसे ही बैठा था. रचना ने उठने का प्रयत्न किया और उठ खड़ी हुई. किशन उठने का प्रयत्न कर रहा था. क्षण-भर में वह भी डगमगाता खड़ा हो गया, फिर दोनों एक-दूसरे की ओर देखते रहे. किशन ने कहा—"रचना, ऐसा न हो, मैं यूं ही बेसहारा रेंगता-रेंगता मर···" अभी शब्द पूरे भी नहीं हुए थे कि रचना ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया और दुखी स्वर में बोल उठी—"नहीं किशन, खुदा के लिए ऐसा मत कहो." दोनों तन आपस में एक रूह बन कर लिपट गए. कितनी ही देर एक-दूसरे का सहारा लिए उसी मुद्रा में रहे. रचना का वक्ष-स्थल किशन के बदन से होठों की तरह जुड़ गया था. किशन को ऐसा महसूस हो रहा था कि उसके सारे जख्म किसी संजीवनी बूटी से लगकर हरे हो गये हों. रचना भी किशन की भुजाओं की लपेट में यूं जकड़ी थी जैसे किसी बेसहारा बेल को बड़े वृक्ष का सहारा मिल गया हो और उस वृक्ष के सहारे बेल ऊपर चढ़ी जा रही हो. रचना अभी तक किशन के बाहुपाश में बन्धी थी, आंखें बन्द किये उसे यूं लग रहा था जैसे सदियों से यूं ही खड़ी है. रचना धीरे से बोल उठी—"किशन, मैं तुम्हारा सहारा नहीं, पर हम दोनों एक-दूसरे के सहारे हैं."

सुबह ही किशन की आंख खुल गई थी, परन्तु फिर भी आंखें मूंदे वह इधर-उधर करवटें बदल रहा था. कल रात कहे रचना के शब्द उसको

विचारधारा में जल-प्रवाह की भाँति बहे जा रहे थे. वह रचना के ख्यालों में डूबता जा रहा था—"जब वह भंवर के मंझधार में डूब रहा था तो केवल रचना ही तो जीवन-रूपी नौका बन कर उसे भँवर से निकाल ले गई थी—मेरे जीवन को सँवारा और फिर मेरी कला की प्रगति के लिए उसने कितने कष्ट से मुझे शिक्षा दी थी, यहाँ तक कि मुझे अपने चलाये हुए स्कूल मे मान-पद प्रदान किया—हर प्रकार से मेरी खुशी पूरी करने का प्रयत्न किया." रचना के पास कितना स्नेह, कितनी ममता, कितने सुझाव थे. किशन के प्रति—बहिन-सा स्नेह, माँ-सी ममता और एक दोस्त की तरह हमसफर. तस्वीर के हर पहलू उसमे मौजूद थे. यह प्रेम, स्नेह केवल किशन के प्रति ही न था. रचना किशन की माँ को भी कितना प्रेम करती थी. उसके चले जाने का सदमा, रचना के हृदय में कितना गहरा घाव छोड गया था. फिर किशन के दिमाग में माँ की तस्वीर घूमने लगी. उसे माँ के कहे शब्द आकाशवाणी की भांति याद आ गये—"किसी के अहसान का बदला चुकाने के लिए अगर जीवन भी बलिदान करना पड़े तो कम है." तस्वीर का किनारा पलटा. किशन अपने विचारों में ही रचना का रूप दुल्हन बना देख रहा था, "अगर उसके जीवन-भर के अहसानों के बदले वह उसे अपना जीवन साथी बना ले तो कोई···मगर··· किशन, अपने दिल से पूछो, तुम्हें भी तो रचना की ओर कुछ झुकाव था—जब कभी भी उसके बारे में सोचते तुम्हारी हृदय-धड़कन खामोश हो जाती—यह प्रेम नही तो फिर क्या था ?" किशन कितने ही ऐसे अद्‌भुत प्रश्न अपने आप से किये जा रहा था—"परन्तु मैंने तो रचना को इज्जत-भरी निगाहों से देखा है—वह मेरी गुरु—मैं शिष्य—तो फिर वह मेर जीवन में पत्नी के रूप में कैसे···नही-नही, किशन, यह तुम्हारा गलत ख्याल है. दोस्त को भी तो इज्जत की निगाह से देखा जाता है तो फिर पत्नी तो एक माननीय पदवी है. गुरु और शिष्य का रिश्ता तो कला-क्षेत्र तक ही सीमित है—पत्नी बन के भी तो वह कला-क्षेत्र मे तुम्हारी गुरु ही रहेगी."

किशन विचारों की उथल-पुथल में व्यस्त कितने ही सवाल अपने आप से पूछ बैठा था. फिर उसने स्विच जगाकर कमरे में बिजली जगा दी और

उठकर मेज से पैन और कापी उठा लाया और बिस्तर पर बैठ गया. उसने कापी से दो कागज निकाले और पैन का ढक्कन खोल कर कुछ लिखने का प्रयत्न करने लगा, परन्तु रुक गया. उसके मन में विचार उठ रहा था कि रचना तक अपने दिल की बात कैसे पहुँचाये. उसके सम्मुख वह कुछ कहने में असमर्थ था. न-जाने भावों में बह कर रात को इतनी बातें कैसे कर गया था. उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर लिखे भी तो क्या और कैसे लिखे. फिर कुछ समय के लिए उसी प्रकार बिस्तर पर बैठा रहा. अन्त में उसने पैन उठा ही लिया और लिखने बैठ गया.

रचना,

कल रात आपके नयनों में मैंने वह प्रेम-सागर उछलता देखा जिसकी गहराई का अंदाजा नहीं. आपके वार्तालाप में जीवन की सत्यता और भावों की वो ऊँचाई थी जहाँ तक शायद ईश्वर भी न पहुँच पाए.

वैसे तो आप माननीय देवी मूर्ति का रूप हैं और जो बात मैं कहने जा रहा हूँ या कह चुका हूँ शायद मैं उसके काबिल नहीं.

परन्तु रास्ते पर पड़ा पत्थर अगर मन्दिर में लग जाए तो वह भी मन्दिर का हिस्सा बन जाता है.

आपने ठीक ही कहा है, जिन्दगी के रास्ते अजीब हैं—न-जाने किस जगह कौन मिल जाए और उसका साथ गुजरे वक्त के हमसफर से भी बेहतरीन हो.

अगर मैं कहूँ, जिन्दगी के इस सफर में, इस जीत-हार में कोई और बेहतरीन दूसरा दोस्त पाया है मैंने तो महज आप. क्यों न हम मंजिल को बाँट लें और—जीवन के उन कच्चे धागों में बंध जायें जिन्हें प्रेम का इतना गहरा रंग चढ़ा हो कि फिर न टूट सके···मैं···मेरा मतलब···ओह इससे ज्यादा न लिख पाऊँगा.

किशन

रात-भर रचना करवटें बदलती रही. उसकी आँखों से नींद जैसे कोई चुरा के ले गया हो. उसके दिमाग में कई तरह का विचार तूफान की लहरों की भांति एक के बाद दूसरा टकरा रहा था. वह सोच रही थी—क्या जो कुछ रात हुआ है, वह सच है, किशन, क्या···हम दोनों—उसके

हृदय में कई प्रकार की तरंगें उठकर उसके दिमाग से टकरातीं—"यह बात ठीक है कि किशन के जीवन की सफलता का रहस्य केवल मैं हूं, अगर उसे मेरा सहारा न होता तो शायद जिन्दगी की राहों में भटकता फिरता. कल तक वह मामूली आदमी था—आज वह दुनिया के लोगों में उस स्तर पर खड़ा है जहां कोई ही पहुंच पाता है. उसका नाम दुनिया में जाना-पहचाना है—उसकी कला के चर्चे हर मुल्क में हैं—दुनिया के कौन से मुल्क में वह आर्ट गैलरी है जहां उसका चित्र अंकित न हो—आज उसके हाथों निकली चन्द-एक लकीरों की कीमत लाखों रुपये है—उसके पास धन, दौलत, इज्जत, मान सबकुछ तो है और इस बात का श्रेय भी मुझे है. क्या वह मेरे अहसानों से दब कर अपने प्यार की दुनिया का और अपने अहसानों का खून तो नहीं कर रहा. मगर यह कैसे हो सकता है—मैंने तो कभी उसे कुछ न कहा. फिर विचारधारा का दूसरा सिरा पलटता है, "मगर किशन तो पैदा ही कलाकार हुआ था—चित्रकारी तो उसके जीवन की सांसें हैं. मैंने आज तक कितने ही लोगों को मदद का सहारा दिया. सभी तो किशन न बन पाए—वह तो केवल एक ही है—मेरा सहारा तो नाम मात्र है—एक कलाकार की कला भी कभी छुप सकती है ? मेरा मिलना तो एक बहाना है. अगर मैं न मिलती तो भी मुझे यकीन है—एक दिन यह बड़ा चित्रकार होता—तो फिर मेरा अहसान कैसा ?"

प्रेम तो एक ऐसी वर्षा की फुहार है जो प्राकृतिक रूप से गिर कर जमीन के दामन पर जरूर पड़ती है—उसी प्रकार प्रेम के फूटते अंकुर को भी भला कोई रोक सका है. हर रात के बाद दिन जरूरी है—उसी तरह हर प्रेमी के हृदय की धड़कन में दूसरे प्रेमी का नाम. प्यार एक ऐसा बेचैन दर्द है, जिसकी पीड़ा का मरहम केवल दो दिलों का संगम है. किससे कब प्रेम हो जाए, बस की बात थोड़े ही है. तो क्या किशन मुझसे प्रेम करने लगा है ? ऐसी बातें सोचते-सोचते रात के कई पहर बीत गए पर रचना अपने विचारों की माला में गुंथी जा रही थी—"मैंने तो किशन को कभी उस निगाह से देखा तक नहीं." उसके विचार का दूसरा रूप उसे उत्तर देता —"पगली, तू उस निगाह को कभी परख सकी है जो अनजाने में उठ गई हो—कई बार उसके प्रति सोचकर तेरे दिल में एक अजीब मीठी-मीठी

दर्द-भरी तरंग गुजर जाती. क्या वह प्रेम नहीं. और रचना हर औरत की भांति अपने प्यार के इजहार से अपने हाथों में मारे शर्म के मुंह ढक लेती जैसे कि वह प्रेमी के पास ही बैठी हो.

इसी तरह और भी कई तरह के विचारों में डूबी सुबह हो गयी. आज वह बिस्तर से कुछ जल्दी ही उठ गई थी. जब वह उठ कर चूल्हा जला रही थी तो उसे यूं महसूस हुआ कि उसकी आत्मा का शायद कोई दूसरा जन्म हुआ हो. उसका अंग-अंग मस्ती से भरा पड़ा था और अपने आपको बहुत ही आकर्षक छोटी-सी गुड़िया की भांति महसूस कर रही थी. फिर नौकरानी ने चाय के लिए पानी रखा और रचना ने चाय बनाई और ट्रे में रखकर किशन को देने के लिए कदम बढ़ाया ही था कि किशन का ख्याल आते ही उसका दिल धक से हो गया आंखें झुक गईं. उसके मुंह से बेहोशी में शब्द निकले,"हाय कैसे जाऊँगी उनके सामने". नजदीक खड़ी नौकरानी ने दोहराया—"जी कुछ कहा मालकिन ?" रचना को जैसे होश आ गया हो. आज वह कैसी अनाड़ी बन गई है. अपनी सुध-बुध खो बैठी है. रचना ने बात बदलते हुए कहा—"हाँ,यह चाय तुम ही दे आओ". नौकरानी चाय लेकर चली गई. रचना को अपने हाल की स्वयं खबर तक न थी. सोचने लगी—"आखिर मुझे जाना ही पड़ेगा. कब तक यूं—मगर उनके सामने अब जाने की हिम्मत भी तो नहीं पड़ रही है". आज की रचना और पहले की रचना में कितना अन्तर आ चुका था ! प्रेम भी क्या मर्ज है कि रंग-रूप ही बदलकर रख देता है. वह उसके, कमरे के सामने खड़ी थी. "रचना बैठोगी नही"—यह शब्द रचना के कानों में मधुर स्वर की भांति गूंज उठे.

रचना पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गयी. कुछ देर दोनों चुपचाप रहे फिर किशन ने साहस बटोरकर कहा—' रचना, मुझे माफ करना, न-जाने रात को मैंने नशे में क्या-क्या कह दिया था." यह शब्द सुनते ही रचना का बदन ठंडा पड़ गया, धमनियाँ सुन्न पड़ गईं, जैसे कमरे की दीवार उस पर टूट पड़ी हो. किसी ने उसके गले मे विष-भरा प्याला उँडेल दिया हो और उसके प्राण-पखेरू छटपटा रहे हों ! उसके दिमाग में यह शब्द भारी चट्टान की तरह टकराए और वह फटी आंखों से किशन की ओर देख रही थी—

सोचने लगी तो क्या वह सब झूठ था जो कल रात हुआ—जैसे उसका हृदय किशन के कदमों में पड़ा यह विनय कर रहा हो—"किशन, जो कुछ तुमने कहा है कह दो यह सब गलत है." वह किशन की तरफ बुत बनी देखती रही. किशन भी उसकी यह दशा देख कर खामोश-सा हो गया. उसके मुँह से शब्द बड़ी मुश्किल से निकला—"रचना"—और फिर खामोश हो गया. रचना अपना नाम सुनते ही चौंक उठी जैसे वह फिर से होश में आई हो—और धीरे से बोली—"नहीं किशन, ऐसी कोई बात नहीं." और उठ कर चल दी.

किशन बिस्तर पर पड़ा अपनी नासमझी पर बड़ा शर्मिंदा हुआ. उसने तो यह शब्द केवल बात बढ़ाने के लिए सहारा लेकर कहे थे—तो फिर वह चुप क्यों हो गया ! किशन अपने आपको कोस रहा था.

० ०

किशन तैयार होकर जब बाहर की ओर आया तो खाने की मेज पर रचना नाश्ता लगाने में व्यस्त थी. किशन के आने की आहट ने उसका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित किया. नाश्ता खाने का संकेत करती हुई रचना भी साथ वाली दूसरी कुर्सी पर बैठ गई. रचना की आँखें खामोश व चेहरा उदास-उदास-सा जान पड़ रहा था, पर वह शून्य चेहरे को छुपाने का प्रयत्न करती. परन्तु उदासी उतनी ही अधिक नजर आती. किशन नाश्ता करते-करते रचना की ओर निहारता जा रहा था. प्रयत्न करने के बावजूद भी उसके मुँह से कोई शब्द बाहर न आ रहा था. खाने के मेज पर चुप्पी छाई हुई थी. जब नाश्ता समाप्त होने को आया तो किशन के मुँह से बड़ी मुश्किल से शब्द निकले—"रचना, न-जाने क्या बात है, चाहता हुआ भी आपके सम्मुख कुछ न कह पा रहा हूँ." और उसने जेब में हाथ डालकर एक सफेद रंग का लिफाफा निकालकर मेज पर रख दिया. रचना कभी उसके चेहरे की ओर तो कभी लिफाफे की ओर देखती. किशन फिर बोला—"रचना, इसमें आपके लिए पत्र है." वह मेज से उठ खड़ा हुआ और दफ्तर की ओर बढ़ने लगा. रचना भी उसके साथ नित्य की भाँति बरामदे तक आई. किशन ने गैरेज से कार निकाली और जाते-जाते कुछ देर के लिए रुक गया—वह रचना की ओर इस प्रकार से देख रहा था

जैसे उसकी आंखें जाने की आज्ञा मांग रही हों पर मुंह से कुछ न बोल सका. रचना भी चुप रही और जब तक किशन आंखों से ओझल न हो गया वह वहीं खड़ी उसे देखती रही.

रचना के कदम पीछे की ओर हटने लगे. उसका हृदय उदास-उदास, चाल जैसे बोझ बन चुकी हो, आंखें देख तो रही थीं परन्तु सुध नहीं. किशन-द्वारा कहे शब्द जैसे उसकी मौत का सामान बन चुके थे. जैसे उसकी सपनों-भरी चारदीवारी टूट कर छिन्न-भिन्न हो गई हो. उसे अचानक पत्र की याद आई, उसे पल-भर के लिए लगा कि यह पत्र नहीं विष का प्याला है जो उसके जीवन का आखिरी पैगाम लेकर आया है. उसकी यही विचारधारा थी कि पत्र में किशन ने रात को हुई घटना की माफ़ी चाही होगी—लिखा होगा, नशे में जो हुआ उसके लिए शर्मिंदा हूं—क्षमा चाहता हूं. उसने पत्र उठाया और पढ़ने लगी. जैसे वह पत्र पढ़ती जाती वैसे-वैसे उसका रंग-रूप बदलता गया. जब पत्र खत्म किया तो उसके चेहरे पर बहुत ही सुहावनी मुस्कान थी—उसका अंग-अंग खुशी से प्रफुल्लित था जैसे पल-भर में ही गर्म मरुस्थल में किसी ने कलियों का बाग खिला दिया हो—हृदय की धड़कन तेज हो गई—होठों पर जैसे वर्षों पश्चात् मुस्कराहट लौटी हो और आंखों के आगे सपनों-भरी दुनिया खड़ी हो. वह लिपट जाना चाहती थी. उसने पत्र को फिर पढ़ना शुरू किया. अभी भी उसे विश्वास न हो रहा था, क्या यह उसका भ्रम तो नहीं है. वह गम्भीरता से पत्र को कई बार पढ़ चुकी थी. उसके मुंह से शब्द निकले—"क्या यह सब सच है!" खुशी के मारे उसके मुंह से अजीब-सी हंसी चीख के रूप में निकल गई. नौकरानी रसोईघर से एकदम बाहर आई, बोली—'क्या हुआ मालकिन." रचना ने नौकरानी को यूं कहते सुना तो अपने भावों पर काबू पाते हुए बोली—"कुछ नहीं, तुम्हें बुलाया था. एक गिलास पानी दो." जैसे ही नौकरानी पानी लेने मुड़ी, उसने पत्र को प्यार भरी निगाह से देखते हुए चूम लिया और कमीज के अन्दर वक्ष-स्थल में डाल दिया. नौकरानी ने पानी लाकर रखा, रचना एक ही सांस में पानी के गिलास को गटगट पी गई.

जब वह चलने लगी तो रचना यूं महसूस कर रही थी कि वह तितली

बनी ऊपर ही ऊपर आकाश पर उड़ी जा रही हो. हर वस्तु उसे बहुत ही सुहावनी नजर आ रही थी. वह चौके में पहुंची और काम में नौकरानी का हाथ बटाने लगी. काम करते-करते वह अपने पर पूरा नियन्त्रण रख रही थी कि कहीं अनजाने में नौकरानी के सम्मुख कुछ ऐसी बात न कह बैठे. काम करने के पश्चात् बाग में पानी देने लगी. आज बाग के पत्ते-पत्ते में उसे किशन का रूप नजर आ रहा था. और हर फूल जैसे किशन का मुस्कराता हुआ चेहरा. उसके पश्चात् रचना कमरों की सफाई में लीन हो गयी, उसके हाथ काम तो कर रहे थे परन्तु दिमाग, दिल कहीं और उसे खींचे जा रहा था. वह स्टूडियो में गई और वहाँ का सामान ठीक किया. जिस कुर्सी पर रात को किशन बैठा था, रचना ने उसे हिलाया तक नहीं और जैसे वह कुर्सी से कह रही हो—"ऐ मेरे महबूब को सहारा देने वाली कुर्सी, मुझे तुम से भी प्यार है—मैं तुम्हें इस लिए नहीं छू रही हूँ कि शायद तुम उसके बिना नींद में खोई हो—मैं तुम्हें जगाना नहीं चाहती."

रचना आज कितनी बदल चुकी थी. सदियों से उजड़ी रचना के हृदय की नगरी आज फिर बस गयी थी. उसके आँचल में फिर से किसी ने प्यार की पवित्र कलियाँ सजा दी थीं. प्यार तो उसे पहले भी मिला था परन्तु बेजान प्रेम जिसके पर्दे के पीछे कोई मतलब छुपा था. पर आज—उसकी रूह रचना से कह रही थी कि उसे जन्म-जन्म का खोया प्यार मिल गया है, एक ऐसा प्रेम, ऐसा स्नेह जिसकी छाया का प्रतिबिम्ब केवल पवित्रता है, प्यार का वह रूप जिसकी व्याख्या असम्भव है—मिलन का वह राग जो किसी संगीत-ध्वनि पर न उतर पाये.

आज वह शायद दुनिया की हर वस्तु से ज्यादा प्रसन्न थी. वह ड्राइंग रूम की ओर बढ़ी. उसे ठीक करने के बाद किशन के सोने के कमरे में प्रविष्ट हुई. वहाँ पाँव रखते ही उसका हृदय इतना तेज धड़क उठा जैसे किसी भयानक चीज से डर गयी हो, पर उस हृदय-धड़कन में डर नहीं परन्तु मधुर मिलन की आवाज आ रही थी. उसने सारे कमरे की सफाई की और जब किशन के बिस्तर पर पड़े उसके नाइट सूट को छुआ तो रचना के बदन में एक तरंग-सी निकल गई. उसकी आँखें बन्द हो गयी—"हाय ये कैसा जादू." आज किशन के नाईट सूट का स्पर्श उसके लिए कितना

मीठा दर्द बनकर उसके हृदय में उतरता गया ! रचना बेसुध आँखें बन्द किये वहीं खड़ी रही. उससे अपनी यह दशा सम्भाली न जा रही थी. उसने नाईट सूट को जोर से अपने बाहुपाश में भींच लिया और उसमें मुँह छुपा लिया.

घर का सारा काम समेट लेने के पश्चात् रचना ने अपने बालों को खोला और उनमें तेल डालने लगी. अच्छी तरह मालिश करने के पश्चात् वह बाथरूम की ओर बढ़ी. दरवाजा खोलकर अन्दर प्रविष्ट हुई और चिटकनी लगाकर दरवाजा बन्द कर दिया. बाथरूम में दो टब पड़े थे, एक बड़ा और एक छोटा—ऊपर से शॉवर लगा था और साथ ही पानी गर्म करने के लिए गीजर था. रचना ने बत्ती जलाकर नहाने का कमरा रोशन कर दिया और पानी गर्म करने के लिए गीजर का स्विच चला दिया, फिर धीरे-धीरे वस्त्र उतारकर पास पडे हैंगर पर टाँगती जा रही थी. उसके प्रतिबिम्ब का साया दीवार में लगे शीशे पर स्पष्ट रूप से दिख रहा था. जब नहाने के लिए उसने सभी वस्त्र उतार दिये तो उसकी नजर शीशे पर पड़ी. किशन का पत्र अभी भी उसके वक्षस्थल मे बायें उरोज पर चिपका था. पत्र को यूँ चिपका देखकर उसके शरीर में एक आनन्दमय लहर दौड़ गयी—फिर उसने धीरे से पत्र को निकाला और खोला—रचना की नजर कमरे के चारों तरफ गई, वह बैठने के लिए कोई स्टूल ढूंढ रही थी. कमरे में कोई स्टूल न था, उसने एकदम चिटखनी खोली और बाहर के कमरे से कुर्सी बढ़ाने को बढ़ी ही थी कि उसकी नजर बढ़ती हुई टाँगों पर पड़ी. उसे आभास हुआ कि उसके शरीर पर तो कोई वस्त्र न था—फिर एकदम दरवाजा बन्द करके गाउन पहन लिया और साथ वाले कमरे से कुर्सी उठा लाई और फिर स्नानागृह का दरवाजा बन्द करके कुर्सी पर बैठ गयी. और एक बेचैन हिरनी की भांति कई बार पत्र को अपने हृदय की गहराइयों में पढ़कर उतारती गयी. बहुत देर उसी दशा में रही. जब रचना की नजर उठी तो शीशे पर पड़ी—गाउन का धागा खुलकर गाउन कुर्सी के दोनों ओर लटक रहा था. उसका शरीर शीशे में प्रत्यक्ष रूप में नजर आ रहा था. उसका वक्षस्थल ऐसा उभरा हुआ था मानों उमर-भर का प्रेम-रस उसके उरोजों में भर गया हो. पतली कमर जैसे

इस बात की सुदृढ़ गवाह हो कि आने वाले प्रेम-तूफान में हर सुख-दुख का बोझ उठाने को तैयार है. लम्बी-पतली गर्दन जैसे मदिरा की मदमस्त सुराही ! गोरे गालों पर काले बाल बिखरे थे, पतली श्वेत चाँदनी-सी आकर्षक बाहें—आज रचना को महसूस हो रहा था कि प्रेम बिन आज तक उसकी गागर खाली थी, पर प्रेम-रस-फुहार से अब उसकी गागर भर कर ऊपर ही ऊपर छलकती जा रही थी.

वह उठी और पानी से टब भर कर उसमें घण्टों नहाती रही. आज चिर पश्चात् उसके होठों पर प्यार-भरा नगमा गुनगुना रहा था. स्नानगृह में उसका नगमा धीरे-धीरे गूंज कर रचना के कानों में अमृत उंडेल रहा था. नहा चुकने के पश्चात् रचना ने तौलिये से शरीर को पोंछा और एक-एक करके वस्त्र पहन लिए. ऊपर से गाऊन पहन कर तौलिये से धीरे-धीरे बालों को सुखाने लगी.

कुछ देर पश्चात् रचना फिर शीशे के करीब बढ़ी और अपना प्रति-बिम्ब शीशे में बड़े गौर से निहारने लगी. देखते-देखते रचना की छाया एक अनोखे रूप मे बदल गयी. रचना बड़ी हैरत से शीशे में झाँक कर देखने लगी, ये कौन है—इतने में शीशे की मूर्त ने कहा—"हैरत से क्या देख रही हो रचना—पहचाना नही मुझे."—और छाया जोर से मुस्करा उठी और बोली—"अब कैसे पहचानोगी—मुझे गौर से देखो. मैं हूँ तुम्हारा असली रूप." क्यों याद आ गई अब ? रचना ज्यों-की-त्यों खड़ी, देखती रही जैसे उसमें जान न हो. फिर रचना के प्रतिबिम्ब ने कहा—"रचना, इस आईने में नहीं, मेरी आँखों के आईने में देखो, अपने दिल में झाँको···तुम अपना रूप देख पाओगी, कितने धब्बे हैं तुम्हारे आँचल में—कितना भयानक है तुम्हारा रूप, जो तेरे दिल में छुपा है. ओह ! ओ··· भूल गई···कल ही की तो बात है, जब तुम तवायफ बनी लोगों का दिल रिझाती थी···उन पे तीरे-नजर फेंक कर घायल करना तुम्हारा पेशा ही तो था···अपने प्रेमी को भूल गई, जिसके बच्चे की तुम माँ बनी थी, पर उसकी साँसों को गर्भ में ही घोंट दिया तुमने···तुम्हारा स्त्रीपन कहाँ है, जिसका गर्व करके नारी अपनी माँग में किसी के पवित्र प्रेम का सिंदूर भरती है···चलो माना, किशन को तुम अन्धकार मे रख लोगी···पर क्या

अपनी आत्मा को भी धोखा दोगी ? रचना के मुँह से जोर से चीख निकल गई. उसने आईने को तौलिये से ढक लिया और दीवार के सहारे खड़ी हो गयी और भर्राये हुए स्वर में बोली···"नहीं मैं किसी को धोखा नहीं दूंगी···जहाँ मेरी जगह है मैं वहीं ठीक हूँ."

रचना ने तूफान की भांति दरवाजा खोला और ड्राइंग रूम से कागज और पैन उठा लाई और मेज पर बैठ गयी. लिखते-लिखते उसके हाथ रुक गये, वह अपनी दुनिया का गला खुद ही घोंटने जा रही थी, और खुद ही पास खड़ी तमाशा देख रही थी और तिनका-तिनका जोड़े उसके घौंसले को, उसके घर को, जो रचना ने कितनी उम्मीदें बाँध कर बनाया था, उसी के सम्मुख दूसरे लूटते जा रहे थे···पर वह असहाय कुछ न कर सकती थी. रचना का हृदय कह रहा था कि क्यों अपनी बसी-बसाई दुनिया को उजड़ने दूं···पर आत्मा दूसरी ओर खड़ी उसके हृदय पर नियन्त्रण कर रही थी···बहुत देर बाद रचना के मुँह से कुछ बोल निकले···"हमने कब कहा था, इबादत मेरी के बदले···दो सारा जहाँ मुझको···ऐ···जहाँ के मालिक···इक हसरते गुँचा था···खिलाया अपने ही खूने जिगर से··· है ये फितरत कैसी तेरी अल्लाह, आज हक अपना उस पे भी न रहा" और लाचार हारे खिलाड़ी की भाँति पैन उठा कर लिखने बैठ गयी.

किशन,

आपका खत कई बार मेरी आँखों से उतर कर दिल की गहराई में समा गया···इतना सारा स्नेह आपने जो दिया है, शायद ही सम्भाल सकूँ ···आपका प्रेम बहती हुई गंगा की पवित्र धारा है जिसका अमृत पीकर मनुष्य जन्म-जन्म के पापों से मुक्त हो जाए···आपका हृदय विशाल प्यार का समुद्र है जो कि दुनिया की हर शै को केवल प्यार ही बाँटता चला आया है···इस हृदय में प्रेमिका का स्थान प्राप्त करना मेरे कितने सौभाग्य की बात है.

किन्तु मैं वह औरत हूँ जिसके आँचल में धब्बे लगे हैं, जिन्हें जितना साफ करूँ उतने ही उभरते हैं. मैं स्त्री का वह चिह्न हूँ जिसका दूसरा नाम सिवाय 'अपवित्र' के कुछ नहीं.

पहली बात, मैंने अपने जीवन के बारे में केवल अपनी मजबूरी हालत

का इजहार किया है···परन्तु उसके साथ-साथ यह भी सच है, मेरा जिस्म न-जाने किस-किस में बँट चुका है, मजबूरी को पलभर के लिए भूल कर उस माहौल में···मैं भी तो विलास-क्रीड़ा का काम एक कुशल खिलाड़ी के समान निभाती. मेरे हिरणी-से नयन मेरे विलासी प्रेमियों को छोड़ कर, मुझे भी तो मदमस्त बना देते थे···उन्हीं आँखों से देख रही हूँ उस बीते जमाने की धुंधली यादों के साये···वह सब मुझे कह रहे हैं, तुम भी दोषी हो···कई बार ऐसे सुदृढ़ सुन्दर नवयुवक भी तो मेरी कोठरी में आते, जिन्हें देखते ही मेरा मन···

दूसरी बात, मैं किसी के प्यार में डूब चुकी थी, चाहे वह प्यार का झूठा पर्दा ही था···सुन सकते हो किशन···जिसे तुम दुल्हन का रूप देना चाहते हो···वह दुल्हन बनने के पहले ही माँ बन चुकी थी · हाँ किशन, सच कितना कड़वा होता है···मैं अपने पहले, जिसे मैं प्रेमी की उपाधि तो नहीं दूंगी···हाँ उसी के बच्चे की माँ···परन्तु मैं पढ़ी लिखी-होने की वजह से तर्क, वाद-विवाद में ज्यादा विश्वास रखती थी. धर्म, परम्परा, पुण्य, पाप मेरे जीवन में बहुत कम महत्त्व रखते थे···इस वजह से मैंने अपनी रक्षा के लिए उस बच्चे का गर्भ में ही गला घोंट दिया.

तीसरी बात, न-जाने क्यूं मेरा यह भ्रम है कि आप शायद मेरे अहसानों के बदले अपने आप की आहुति देना चाहते है···किशन, मैंने आपके लिए कुछ भी नहीं किया है···जिसके मुकद्दर में जो है, वही उसे मिलता है. आदमी का आपसी मिलाप तो महज एक बहाना होता है.

आज आप जो हैं, आपके परिश्रम का फल है. किशन, आप ही कहो कि क्या मैं आप जैसे उस मासूम फूल के काबिल हूँ जिसे हवा का झोंका तक न लगा हो···और मैं उस लुटते हुए गुलशन का एक गुल जो कभी खिला था पर वक्त की रफ्तार के साथ-साथ जो भी गुजरता, सूंघता गया, यहाँ तक कि मसल कर रख दिया.

मैं अब इस हालत में पूजा का फूल कैसे बनूं···कौन-सा सिंदूर, कौन-सी माँग में रचा लूं···जो मेरा था वो लूट चुका है.

बस किशन, इतना बहुत है···जिन्दगी तो इतना लम्बा किस्सा है कि

●

कयामत तक लिखे भी खत्म न होगा.

रचना

रचना पत्र समाप्त कर कलम मेज पर रख कर अलमारी की ओर लिफाफा ढूंढ़ने के लिए बढ़ी ही थी कि बाहर से कार का हार्न सुनायी पड़ा. कुछ ही देर में किशन रचना के कमरे में प्रवेश करते हुए बोला—"रचना, आज बहुत दौड़धूप की है—भूख इतनी लगी हैं कि बस पूछो मत —चलो खाना खा लें." रचना किशन की ओर मुरझाए हुए मुख से बोली—"किशन, मुझे भूख नहीं है, आप खा लो." शायद आज पहली बार रचना ने किशन को अकेला खाने की बात कही थी. किशन यह सुनते ही कुछ रुक-सा गया और ऊपर से नीचे तक रचना की ओर नजर डालते हुए बोला—"रचना, आप मुझसे खफा हैं क्या ! मुझसे कोई गलती हो गई है ?" यह कहकर किशन चुपचाप रचना की ओर देखता रहा. रचना धीरे स्वर से बोली—"नहीं किशन, आपसे तो नहीं, खफा मैं अपने-आप से हूँ." रचना ने हाथ में रखा पत्र किशन की ओर बढ़ा दिया और बोली—"किशन, आपके लिए खत है." किशन ने खत थाम कर जेब में डालना चाहा, किंतु रचना का स्वर निकला—"किशन, मैं चाहती हूँ यह पत्र आप मेरे सामने पढ़ो." और कुर्सी की ओर बैठने का संकेत किया. दोनों बैठ गये. किशन कभी रचना की ओर तो कभी हाथ में लिये पत्र की ओर देख रहा था. उसे समझ नहीं आ रही थी कि क्या करे. उसने पत्र को खोला और पंक्तियों पर धीरे-धीरे निगाह दौड़ाता चला गया. जैसे-जैसे वह पत्र पढ़ता जाता उसकी मनोदशा, मुख-आकृति बदलती जाती. रचना किशन की ओर टकटकी लगाये देखती जा रही थी. पत्र पढ़ने के पश्चात् उसने झटके-से बिजली की तरह पत्र बन्द किया और रचना की ओर देखने लगा. किशन के मुंह से कोई शब्द न आ रहा था. रचना भी किशन की ओर चुपचाप देखती गई—थोड़ी देर बाद किशन के मुंह से शब्द निकले—"रचना, जो कुछ लिखा है, क्या लिखना जरूरी था !" किशन कुर्सी से उठा और कोने में लगी बार के पास जाकर बोला—"रचना, नीड आ ई फीक्स ए ड्रिंक फार यू ?" रचना ने गर्दन हिलाकर जवाब दिया—"जस्ट यू लाइक."

किशन ने फ्रीज से ठण्डी बियर निकाली और दो जारों में उँडेलने लगा—फिर दोनों हाथ उठे—'चीयरज़'. कमरा धीमी-सी आवाज से गूँज उठा. किशन एक ही घूँट में सारा जार उँडेल गया और दोबारा जार को भर लिया. कमरा शान्त था, किशन टक-टकी लगाए रचना की ओर देख रहा था कि उसके मुँह से ऊँचे स्वर में शब्द निकले—"रचना, मैं पूछता हूँ कौन से दाग हैं तुम्हारे दामन में, जिन्हें तुम दाग कहती हो—जानती हो, वह तुम्हारी महानता का चिह्न है जिन्होंने दूसरों के गम अपने आँचल में ढाल लिये हैं—तुम कितनी महान हो, शायद तुमको खबर तक नहीं—रचना, तुमने अपने-आपको जमाने की नजर से देखा है, अपने-आपको अपनी रूह के आईने मे देखो—मेरी आँखों से देखो, तुम्हें अपनी वो तस्वीर नजर आयेगी जो तुमने आज तक न देखी हो—उस मूर्ति का प्रतिबिम्ब दया, शान्ति, प्रेम, सच्चाई का उजाला देता है—जहाँ फरेब, झूठ, अन्धे रस्मो-रिवाज का साया तक नहीं—रचना, गंगाजल वो ही पानी है जो प्यासों को शान्ति देता है, चाहे वो नदी गन्दे इलाकों से क्यूँ न गुजरी हो—पर उसके पवित्र पानी में कितनी महानता होती है, जो हर इन्सान की प्यास बुझाता है, उन्हें नया जीवन देता है." इतना कहकर किशन चुप-सा हो गया. आँखें मूँद कर कुछ देर बैठा रहा. रचना ने सिगरेट का पैकेट उठाया. एक सिगरेट किशन की ओर बढ़ाकर दूसरा स्वयं लगा लिया. सिगरेट सुलगा लेने के बाद दोनों एक-दूसरे की ओर देखते रहे. किशन ने फिर लम्बी साँस भरते हुए कहा—"बहुत खूब लिखा है रचना तुमने." रचना ने किशन को बीच में ही टोकते हुए कहा—"किशन, मैंने कोई लेख या भाषण नहीं, परन्तु जीवन में घटित हर वो बात कही है जो कल्पना नहीं, हकीकत है किशन."

किशन ने बड़े गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"जानता हूँ रचना, हकीकत है ये, पर अफसोस है कि हकीकत का अर्थ समझने में आज तुम भी असमर्थ हो गयी हो—अगर एक सच्चा इन्सान कभी झूठ बोले भी, महज किसी बेहतरी के लिए, जिस झूठ में कोई किसी की हानि न हो पर लाभ ही पहुँचे, तो क्या इस छोटे-से आधार पर उसको झूठा होने की परिभाषा दी जाये.

रचना, जो आपके साथ हुआ वह केवल उस परेशान व्यक्ति की तरह था, जो कैद की मजबूत जंजीरों में जकड़ा हो, पर उसकी आत्मा स्वतन्त्रता पाने के लिए कराह रही हो—क्या तुम दावे से कह सकती हो कि तुम भोग-विलास की भूखी थीं—कभी नहीं. रचना भूख-प्यास प्राकृतिक क्रिया होती है जिन पर वश पाना कभी-कभी इन्सान की पहुँच से दूर हो जाता है—मैं पूछता हूँ, क्या संसार-भर में ऐसा वृक्ष बता सकती हो जिसके पत्ते हवा के मदमस्त झोंकों से आज तक न हिले हों—यह सब-कुछ तुम्हारा वहम है, तुम्हारी भूल है कि तुम गुनाहगार हो—आप ही ने तो कहा है बीती बातों को जीवन की सफलता के लिए भुला देना आवश्यक है, तो तुम आज ये सब कुछ क्यों दोहरा रही हो ?"

किशन की आँखें छलक आयी थीं. उसने सिगरेट का कश लिया. रचना जैसे बुत बनी बैठी हो. उसकी जबान सिल चुकी थी, वह कुछ कहने योग्य न थी. किशन फिर बोल उठा—"रचना तुमने कहा है न, एक सफल खिलाड़ी की भाँति आप भी···जानती हो अगर प्यास से सताये एक महात्मा के आगे एक चोर-चोरी किया हुआ ऐसे स्थान से जल रख दे जहाँ पानी की कमी न हो, तो शायद एक महात्मा भी आत्म-तृप्ति के लिए उस जल को जी भर कर पी जाये."

किशन कुछ समय तक फिर मौन हो गया और दोबारा फिर उसकी भर्राई हुई आवाज से शब्द टपक पड़े—"रचना, घनघोर बादलों से भारी वर्षा होना आवश्यक है, और तेज तूफान-भरी वर्षा से नदी-नालों में बाढ़ आ जाती है—हरी-भरी खेती, इन्सान की खुशहाल बस्तियों को बचाने के लिये बाढ़-भरे पानी के रास्ते बदल दिए जाते हैं, चाहे पानी को कितनी ही महानता का पद ग्रहण क्यूं न है—आपने···मेरा मतलब चाहे वह आपके ही खून का लोथड़ा क्यूं न था, उसका गला घोंट कर मेरे विचार में कोई गुनाह तो नहीं किया है. अगर ऐसा न करती तो आने वाले कल में शायद यह बात आपके जीवन में विष-भरा तूफान मचा देती—बाढ़ के पानी की भाँति. और आप अपनी मानसिक दशा से घुट-घुट कर दम तोड़ देती—आपकी इसमें गलती केवल इतनी है कि आपने अपनी नैया की पतवार ऐसे आदमी को सौंप दी, जो तुम्हारे विश्वास को खंजर से छलनी कर

गया—तुम्हें भंवर में अकेला छोड़ गया.

रचना, आप प्रेम को इतनी संकीर्ण नजर से तो न देखो. कैसे अब आप सिंगार के योग्य न रही ?—कैसे आपका सब कुछ लूट गया है ? क्या आप प्यार को तृष्णा का नाम देती हो—प्यार क्या महज दो बदनों का मिलाप है ? अगर प्यार यही है तो फिर वह प्यार क्या है, माँ, भाई-बहिन —क्या तुम उन्हें भी यही परिभाषा दे सकती हो—कभी नहीं रचना, कभी नहीं. प्यार को उस परख की निगाह से देखो जो सीमारहित है—प्रेम की उज्ज्वलता, महानता को परख की नजर से देखो—प्रेम एक ऐसी मन्द-मन्द शीतल हवा का झोंका है जो तपती लू पर इन्सानों को नया जीवन प्रदान करता है—जीने की प्रेरणा देता है—शान्ति से. स्नेह से रहना सिखाता है—प्रेम ईश्वर की मूर्ति का नाम है—जीवन-सन्देश है. वासना-पूर्ति प्रेम का वह तुच्छ रूप है जिसकी गिनती कहीं नहीं, मन में उठे तूफान को शान्त करने का एक तरीका है—परन्तु अगर वासना ही प्रेम का नाम होता तो शायद—प्रेम नाम का शब्द आज से सदियों पहले मिट चुका होता." अभी भी किशन की आँखें आँसुओं की लड़ी से तर थीं. ···"रचना मुझे गलत न समझो—मैं पैसों के लिए या आपके अहसानों से दब कर यह नहीं कर रहा—पैसों के हाथों प्रेम का सौदा कभी न कर पाऊँगा···मैं स्वयं भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि किस आकर्षण शक्ति से तुम्हारी ओर खिंचा जा रहा हूँ और शायद यही आकर्षण-शक्ति प्रेम है.

किशन ने कोट की जेब में हाथ डाला और एक डिबिया निकाल कर हाथ में ले ली और वह डिबिया की ओर बड़ी भावुकता से देखने लगा. कुछ समय पश्चात् फिर कह उठा—"रचना, मैं अपने जीवन की उस खाई में ठोकर खाकर गिर चुका हूँ जहाँ से उठना अब मेरे लिए असम्भव था—अगर आप भी मुझे सहारा देकर बाहर न निकाल सकोगी तो शायद जीवन के अन्धकार में रोशनी की किरण को तड़पता हुआ घुट-घुट कर दम तोड़ दूंगा." अब किशन बच्चे की भाँति रो पड़ा, आँसू किशन के कपोलों को चीरते हुए नीचे गिर रहे थे परन्तु रचना ज्यों-की-त्यों चुप बैठी थी, जैसे वह अपने होश खो बैठी हो. उसकी समझ में कुछ न आ रहा था कि क्या करे, क्या न करे. किशन के हाथ में अभी भी वह डिबिया बच्चों की

भाँति खेल रही थी. किशन ने डिबिया की ओर नजर डालते हुए कहा—"रचना, कहने को तो इसमें एक बहुत मामूली-सी चीज है परन्तु इसमें जो भाव भरे हैं, जो कल्पनाएँ भरी हैं उसकी कीमत शायद भगवान के पास भी न हो—जिन्दगी में मर्द कोई तुच्छ-से-तुच्छ वस्तु भी प्रेम-भरे हृदय से औरत के लिए लेता है तो वह वस्तु उन दोनों के लिए एक महान अर्थ रखती है—जिन्दगी में एक बार मैंने किसी को एक फूल उपहार में दिया था, परन्तु वह फूल वक्त की लहर के साथ मुर्झा गया, उस फूल की किसी ने कीमत न जानी—और आज दूसरी बार." यह कहते हुए किशन ने डिबिया खोली और एक छोटी-सी अँगूठी निकाल कर हाथ में ले ली और रचना की ओर देखते हुए बोला—"दूसरी बार बहुत अरमानों से—आपके लिए उपहार खरीद लाया हूँ. अँगूठी जब कोई किसी को पहनाता है तो आप इसका मतलब भी समझती होंगी," कहते हुए किशन ने अँगूठी वाला हाथ रचना की ओर बढ़ा दिया. किशन के हाथ से अँगूठी अपनी ओर बढ़ते देखकर रचना के बदन में सनसनी दौड़ गई. वह भयभीत-सी हो उठी और धीरे-से बोली—"किशन, मुझे क्षमा कर देना—मैं बड़े दुःख-भरे शब्दों में कह रही हूँ, शायद इस योग्य मैं नहीं." यह शब्द सुनते ही किशन का हाथ वहीं-का-वहीं रुक गया और रचना की तरफ तीखी-सी दृष्टि डाल कर बोला—"क्या आपका यह अन्तिम फैसला है ? सोचा था, आपके आँचल के साये में रहकर जिन्दगी के बचे दिन हँसी-खुशी से काट जाऊँगा—पर खैर !" यह कहते हुए किशन कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बिना कुछ खाये कमरे की ओर बढ़ गया. रचना उसी अवस्था में बहुत देर तक बैठी रही—वह विचारों की गुँझल में उलझी पड़ी थी, कि क्या करे—क्या न करे.

कुछ देर उपरान्त हाथ में छोटा-सा अटैची केस लेकर किशन कमरे से बाहर आया. उसका चेहरा मुरझाया व उदास-उदास-सा था. यह देखकर रचना हैरान-सी हो उठी कि अटैची लिए किशन के इस प्रकार अचानक जाने का अभिप्राय—"क्या वह जा रहा है ?" रचना के हृदय ने प्रश्न किया, और यह सोचकर उसकी हृदय-गति तेज हो गई, आँखें जैसे चुँधिया गई हों. किशन ने नजदीक आकर कहा—"रचना, मैं जा रहा हूँ, कहाँ—

शायद खुद भी नहीं जानता, मुझे माफ कर देना, मैंने आपको दुःख पहुँचाया है."

यह कह कर किशन धीरे-से बाहर की तरफ बढ़ गया. उसके पदचाप की आवाज रचना के मस्तिष्क पर जैसे हथौड़ा मारती जा रही हो—यह क्या हो गया, क्या ऐसा भी सम्भव है ! किशन उसे छोड़कर जा रहा है. रचना किशन को पुकारना चाहती थी परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी उसकी आवाज नहीं निकली. उसका गला सूख गया था मानों जबान काट ली हो. जब किशन दरवाजा पार कर चुका तो रचना को किसी अज्ञात शक्ति ने बिजली के झटके की भाँति कुर्सी से उठा दिया, वह दरवाजे की ओर तेजी से लपकी. उसकी दृष्टि किशन पर पड़ी जो धीरे-धीरे बरामदे की सीढ़ियाँ उतर रहा था. रचना के मुँह से चीख निकली—"किशन, मुझे अकेला छोड़कर जा रहे हो तुम !"

किशन के कानों में जब यह शब्द पड़े तो उसने मुड़कर देखा. रचना किशन की ओर पागल की तरह भागी आ रही थी. किशन वहीं रुक गया. जब रचना उसके पास पहुँची तो बच्चों की भाँति गिड़गिड़ाते हुए बोली —"किशन, मुझे मुआफ न करोगे क्या ?" यह कहते हुए रचना किशन के गले से लिपट गई, उसके कपोलों से आँसू की धारा टप-टप नीचे बह रही थी—"किशन, मैं तुम्हारी हूँ, केवल तुम्हारी." यह शब्द सुनते ही किशन के हाथ से अटैची छूट गई और उसने रचना को अपने बाहुपाश में ले लिया. दोनों एक-दूसरे के सहारे बेसुध कितनी देर खड़े रहे जैसे मरुस्थल की लू से सताये यात्री को ठण्डे पानी का कटोरा मिल जाए और वह पानी को अपने होंठों से लगाए रखना चाहता हो. आज रचना और किशन की दूरियाँ, मतभेद खत्म होकर, वह दो बदन एक ही आत्मा में ढल गये थे. जहाँ केवल खुशी, प्रेम और शान्ति ही हो.

रचना को ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसको नया प्रकाश मिल गया हो, जिस प्रकाश की मधुर किरणों में मधु रस समाया हो. कुछ देर उपरान्त किशन ने रचना के कपोलों पर धीमे से हाथ फेरकर आँसुओं की धारा पोंछ डाली और कहने लगा—"रचना, अब कभी तो साथ न छोड़ोगी न ? अपने-आपको तुच्छ तो न समझोगी—मेरी आँखों में

आपकी पवित्र मूर्ति है—हृदय में आपके प्रति उच्च-भावना—आप मेरे जीवन की कल्पना और अब जीने का आधार बन चुकी हो." किशन ने रचना को और भी अपने बाहुपाश में समेट लिया. रचना अभी भी अपना मुँह किशन के कन्धे पर झुकाए सिसकियाँ ले रही थी. यह आवाज सुनकर किशन बोला—"रचना, तुम्हें मेरी सौगन्ध चुप हो जाओ, मैं यह आँसू की धारा शायद नहीं देख सकता हूँ." रचना ने अपना मुँह किशन के वक्षस्थल में छुपा लिया और धीरे-से बोल उठी—"किशन, मुझे क्षमा कर दो, भावों में बहकर मैं बहुत कह गई, परन्तु मैं अपनी सत्यता आपसे न छुपा सकी—क्योंकि मैं भी आपसे प्रेम करने लग गई हूँ. नारी के दिल में जिसके प्रति प्रेम की ज्वाला सुलग उठती है, उस पुरुष से वह झूठ कभी नहीं बोल सकती—केवल उसे ही वह अपना सर्वस्व समझती है और उसके साथ जीवन की घटित कोई घटना भी छुपाना एक बोझ जानती है —आगे पुरुष उसकी व्यवस्था को किस प्रकार उचित जाने, वह उस पर है. आपने जो मुझे प्रेम दिया है, वह महान है—अगर आप मेरे जीवन में प्रवेश न करते तो शायद ऐसे प्रेम को मैं तड़पती ही रहती. मेरी कड़वी सत्यता जानने के पश्चात् भी आपने मुझे इतना मान दिया, इतना प्रेम दिया—वैसे तो मेरा सबकुछ लुट गया है परन्तु जो कुछ भी मुझमें है··· उन फूलों से ही उपवन को सजाऊँगी. अपने मन-मन्दिर के देवता पर प्रेम के पवित्र फूलों की भेंट अर्पित करूँगी—किशन, मैं तुम्हारी हूँ, बस तुम्हारी ही रहूँगी." यह कह कर रचना जोर से किशन के गले बेल की भाँति लिपट गई.

किशन ने जेब से अँगूठी निकाली और हथेली में रख कर रचना का चेहरा हाथ से ऊपर किया. दोनों की आँखें मिलीं, एक अनोखा अनुभव. दोनों को एक-दूसरे का पहले से भिन्न रूप प्रतीत हो रहा था. किशन ने रचना का हाथ थाम लिया और धीरे-धीरे उसकी उँगली में अँगूठी उतारने लगा. जैसे-जैसे अँगूठी रचना की उँगली में उतरती गई, वैसे-वैसे वह अपने शरीर में एक अद्भुत प्रकार का आकर्षण महसूस करती. उसका अंग-अंग मादकता से झूम उठा, रोम-रोम में खुशी की तरंग नाचने लगी. सिर से पैर तक जैसे बदन महक उठा हो. रचना ने नजर झुका ली. किशन ने

रचना के कपोलों पर फिर धीरे से हाथ रखा और कहा—"रचना, गर्दन उठाओ न, मेरी ओर देखो तो जरा." रचना ने धीरे से उत्तर दिया—"ऊँ हूँ—मुझे शर्म आ रही है—लाज ही तो नारी का भूषण है. अब मैं कैसे देखूं—सच मुझे बहुत शर्म लग रही है." किशन ने होठों पर मुस्कराहट लाते हुए कहा···"रचना, अब तो डोली में सजाकर लाऊँगा तुम्हें सिर्फ छः रोज बाद···अरे हाँ, परसों हमारे स्कूल की वर्षगाँठ है. उस वक्त सगाई पक्की···सबके सामने और पाँच दिन बाद बारात, आपकी और मेरी सजधज के निकलेगी."

एक दिन बीत गया, परन्तु रचना किशन के सामने न आई. अगर वह कहीं किशन को देखती तो छुप जाती. किशन का सामना करना उसके बस की बात नहीं रही थी, परन्तु हृदय में कई प्रकार की बातें सोचती. अपना दुल्हन-सा बना कल्पित रूप, किशन उसके घूंघट को धीरे से उठा रहा हो, इसी प्रकार की अद्भुत बातें सोच कर वह झूम-सी उठती.

आज सुबह ही उठकर वह अपने रूप को आईने में निहार रही थी. अपने मुख पर बचपन के रूप-सी कोमलता देखकर वह अति प्रसन्न थी. उसका रूप मानों नया यौवन ग्रहण कर रहा हो···सुन्दर मुखड़ा, बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बे घने बाल, वह अपने आईने पर टकटकी लगाए हुए थी. उसके होठों पर धीमे स्वर में कोई नगमा गुनगुनाहट कर रहा था. दरवाजे पर एक दस्तक हुआ और साथ ही आवाज आई···"इजाजत हो तो अन्दर आ जाऊँ ?" यह किशन की आवाज थी, और किशन कमरे में प्रवेश कर चुका था. रचना एकदम उठ खड़ी हुई और मुँह को रेशमी दुपट्टे में छुपा लिया, उसके मुँह से स्वर निकला···"जी आप !" "हाँ रचना, आपको कष्ट तो न देना चाहता था घूंघट में मुँह छुपाने का, पर क्या करूं, दिल न माना···आपको कहने आया हूँ, आज हमारे स्कूल की वर्षगाँठ है···और साथ-साथ...आप मेरा मतलब शायद जान गई होंगी, आप अतिथि के रूप में तो जरूर आओगी···क्या मैं जान सकता हूँ, कितने बजे आ रही हैं, आप कहो तो मैं किसी को लेने भेज दूं."

रचना ने धीरे से कहा···"मैं स्वयं पहुँच जाऊँगी और कार्यक्रम स्कूल की वर्षगाँठ का तो···" अभी बात पूरी भी न हुई थी कि किशन बोल

उठा—'रचना, आप चिन्ता न करें, सभी इन्तजाम भली प्रकार से हो चुका है. प्रोग्राम पिछले वर्ष की तरह ही है लगभग···स्टूडेंटस की आर्ट एगजीबीशन, जलपान का प्रबन्ध, बड़े हाल में पुराने चित्र व कुछ अन्य वस्तुएं अलग, दूसरे हाल में बैठने का प्रबन्ध व कुछ समय के लिए सबसे बातचीत व वर्ष भर की उन्नति का ब्यौरा···आप निश्चिन्त रहें सब ठीक है···अच्छा तो मैं चलूं काम ज्यादा है." यह कहते ही किशन एकदम चला गया. रचना वहीं खड़ी चोरी नजर से किशन को देखती रही, उसकी चाल, रंग, रूप, बातचीत का ढंग सबकुछ रचना के मन में एक नई छाप लगा चुका था...जिस छाप का रंग शायद उसके हृदय की गहराइयों तक डूब चुका था.

स्कूल की इमारत आज बहुत ही आकर्षक लग रही थी, हर ओर चहलपहल थी भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग आना आरम्भ हो गये थे. बहुत-से लोग मैदान में एकत्रित आपस में बातचीत कर रहे थे. विद्यार्थी, अन्य देशों से निमन्त्रित लोगों को इधर-उधर साथ ले जाते व उन्हें वस्तुओं, चित्रकला और मूर्तिकला का ब्यौरा भली प्रकार देते. देखते ही देखते बहुत चहलपहल हो गई. कई कारें, स्कूटर और साईकलों की मैदान में लाईन लग गयी. लोग ध्यानपूर्वक प्राचीन चित्रकारी कला व आधुनिक कला की लगी नुमाइश देख रहे थे. कई पत्रकार, कैमरों द्वारा कई चित्रों व मूर्ति आदि के फोटो भी लेते नजर आते. रचना की कार भी आ पहुँची. वह हल्के आसमानी रंग की साड़ी से सुसज्जित थी...उसका रंग-रूप निखरा···चेहरा मुस्कराता और धीरे-धीरे हिरणी के नन्हें बच्चे की भांति कदम बढ़ाती अन्दर आ गई. जैसे ही रचना पर विद्यार्थियों की नजर पड़ी व उसके इर्दगिर्द इकट्ठे हो गए. इतने में दो-तीन पत्रकारों ने फोटो खींच लिए और पंक्ति लगाकर प्रश्न-सूची लिए खड़े हो गये.

एक पत्रकार ने प्रश्न किया···"आज आप स्वयं इस फंक्शन में लेट··· यह तो आपका इन्तजाम है." रचना ने शिष्टाचार-भरे शब्दों में उत्तर दिया—"जी मैं तो स्वयं एक अतिथि के रूप में हूँ, इसलिए समय से सम्बन्ध नहीं, दूसरा इस स्कूल के कार्यक्रम का भार, यहाँ के अध्यक्ष को सौंप दिया है, वही सब कर्ताधर्ता हैं." और भी कई प्रश्नों की बौछार हुई जिन् सबका

वह सन्तोषजनक उत्तर देती गयी.

हाल में सभी एकत्रित हो गये थे, जहाँ कि कुछ समय के लिए स्कूल की हिस्ट्री और अन्य सम्बन्धित बातों पर भाषण हुआ. लोगों ने बड़े शौक से बातें सुनीं, इसके उपरान्त ड्रामा दिखाया गया. इसके बाद दूसरे हाल में जहाँ कि खाने का इन्तजाम था, खास तौर पर निमन्त्रित किये गए लोग, अपने-अपने नाम के लगे टेबल पर बैठना आरम्भ हो गये थे. बहरों की दौड़-धूप आरम्भ हो गयी. पहले ड्रिंक्स दिए गए. सभी अपनी-अपनी जगह पर अपना मनभाता ड्रिंक ले रहे थे. कहीं स्कोच, कहीं ह्विस्की, कहीं बियर तो कहीं कोकाकोला की बोतलें खुलती जा रही थीं.

धीमा-धीमा संगीत आरम्भ हो गया. लोग आपस में बातचीत कर रहे थे कि उनका ध्यान माईक पर एक व्यक्ति के बोलने से भंग हुआ, "लेडीज एण्ड जेन्टलमैन, जैसाकि आप जानते हैं, इस स्कूल की संचालक मिस रचना जो कि आपके बीच मौजूद हैं, उन्हें स्टेज पर आने की प्रार्थना करूँगा." रचना जो किनारे की मेज पर बैठी थी, उठकर स्टेज की ओर बढ़ने लगी. सब की नजर रचना पर लगी थी, और चुपचाप उसे जाता देख रहे थे, जैसे कोई महारानी जी राजसिंहासन की ओर बढ़ रही हों और बैठे लोग अदब-भरी जनता हो. जब वह स्टेज पर पहुँची तो वह व्यक्ति फिर बोला···"वैसे मैं इस स्कल का उपाध्यक्ष हूँ, परन्तु आपके सामने एक खुशी-भरा पैगाम जो कहने जा रहा हूँ, वह एक बड़े भाई की हैसियत से अपने छोटे भाई मिस्टर किशन, जो कि स्कूल के अध्यक्ष हैं और मेरे पास खड़े हैं के प्रति है···मैं बड़े गर्व से यह सूचित करता हूँ कि आज का दिन जो हमारे स्कूल के लिए महत्त्वपूर्ण है, एक और महत्त्वपूर्ण बात कि···मिस रचना की सगाई मिस्टर किशन से दोनों की अनुमति और खुशी-भरे हृदय से, इसकी बधाई दोनों को अपनी तरफ और आप सबकी तरफ से देता हूं, और शादी की तारीख आज से चार दिन बाद तय हो चुकी है." सभी लोग यह बात सुनकर चुप और हैरान-से हो गए, फिर पल-भर के उपरान्त हाल तालियों से और जोर-जोर से कांग्रेचुलेशन के शब्दों से गूंज उठा.

विद्यार्थियों को यह खबर बहुत ही अद्भुत परन्तु मनपसन्द आई.

वह सभी किशन व रचना के पास स्टेज पर पहुँच कर नाच से उठे···चारों ओर बधाई हो···बधाई हो के शब्द गूंजने-से लगे. पत्रकारों ने रचना व किशन के साथ खड़े चित्र ले लिये.

उपाध्यक्ष फिर माईक के पास गया और उसकी आवाज से हाल गूंज उठा···"लेडीज एण्ड जेन्टलमैन, इस खुशी के शुभ अवसर पर हम मिस रचना को स्कूल की ओर से छोटी-सी भेंट करना चाहते हैं, और वह है कला का वह रूप, जिसे ममता कहते हैं. आप सबके सामने मखमली चादरों की सुनहरी तारों में छुपी माँ." पर्दा उठा और एक बहुत बड़े आकार की पेन्टिंग दिखाई पड़ी. एक औरत ममतालु हृदय से, सहानुभूति भरे हाथों द्वारा ममता भरी आँखों से नन्हें बच्चे की ओर देख रही थी,जो कि उसकी गोद में था और उसे दूध पिलाने की कोशिश कर रही थी···कला का एक अनोखा जादू, अछूती कल्पना, जिस चित्रकारी को जो भी देखता बस देखता रह जाता और मन में एक अजीब-सी कल्पना-भरा ख्याल उठता. चित्र सोने के कीमती फ्रेम में जड़ा था. फ्रेम का आकार अति सुन्दर व आकर्षक था. ज्यों ही वह चित्र उपाध्यक्ष ने दोनों हाथों से उठाया और रचना की तरफ देने को बढ़ाया, हाल तालियों से गूंज उठा. आवाजें आने लगी···"हैपी मैरिज टू यू, विश लविंग सन लाईक दिस, ओ लवली फ्यूचर मदर टू यू"···पत्रकारों ने चित्र के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणो से कई आकर्षक चित्र ले लिये, शायद चित्रकला-सम्बन्धित प्रकाशित होने वाल सभी पत्रिकाओं के लिए विश्व-भर में यह बहुत प्रभावक और मोटे अक्षरों भरी खबर थी, क्योंकि देश-विदेश की ऐसी कौन-सी पत्रिका थी जिसमे रचना व किशन के नाम का उल्लेख न हुआ हो, उनके विचार, चित्र व निजी फोटो न छपे हों.

आज तीसरा दिन आ गया, शादी की सभी सामग्री जुड़ चुकी थी. जिस-जिस वस्तु की आवश्यकता थी, घर पर पहुंच गयी थी. दुल्हन की डोली घर से निकलनी थी और दुल्हे की बारात स्कूल से आनी तय हुई. किशन आज सुबह, एक दिन की जरूरत का सामान लिये स्कूल जा चुका था. अब तो वह उस घर में दुल्हन लेने आएगा और फिर सदा-सदा के लिए वह दोनों एक-दूसरे के बन्धन में बन्धे वहीं जीवन का सुख-दुख, हँसी,

गम सबकुछ इकट्ठे कन्धे से कन्धा मिला कर उसी घर में काटेंगे, पति-पत्नी के रूप में.

रचना का मन इस प्रकार डोल रहा था जसे पारा हाथ में रखें तो इधर-उधर फिसल जाता है. उसने जीवन के उतार-चढ़ाव, कठिन मार्ग और प्रसन्नता का समय भी देखा था, परन्तु अभी जो उसके मन की स्थिति थी, कभी न हुई. दुल्हन का आभास उसे प्रिय लग रहा था परन्तु हृदय-गति तेज हो उठती, जब किशन की याद आती. साथ-साथ रहने के बावजूद भी किशन का सामना करना मुश्किल हो गया था. जब पहली बार उसके मुख से घूंघट उठेगा—उफ ! आँखें कैसे खोलूंगी—क्या बात करूँगी—कैसे जवाब दूंगी—इन मधुर-स्पर्शी विचारों से उसको हल्का-सा मधुर भय उठता, बदन में कंपकंपी लहरा जाती.

उधर किशन का भी वही हाल था. उसे यूँ प्रतीत हो रहा था कि रचना को देख सदियाँ व्यतीत हो गयी हैं—रचना का नाम आते ही उसके दिल में मानों कोई हलचल मच जाती, उसकी धमनियों में दौड़ता रक्त ऐसे महसूस होता कि कोई मधुर सरगम गा रहा हो, जिसका अर्थ केवल रचना रचना—और रचना हो. उसे अपनी माँ की याद रह-रहकर सता रही थी—कैसा संयोग है, उसकी माँ ने रचना को देखा, स्नेह, प्रेम सब-कुछ किया परन्तु उसका दुल्हन का रूप न देख सकी.

० ०

दोनों तरफ बारात की तैयारियाँ जोर से चल रही थीं. दूसरे दिन सुबह ही लाउड स्पीकर में गाने गुनगुनाहट करने लगे. स्कूल पहले से ही अच्छी तरह सजाया था. रंग-बिरंगे बिजली के बल्ब—कहीं-कहीं बनावटी गुल-दस्ते और फूल तथा कई भिन्न चीजें थी. काफी लोग इकट्ठे हो चुके थे. शहनाइयाँ गूंजने लगीं. किशन दुल्हा बना एक सुसज्जित कमरे में बिठाया गया. करीब दस बजे बारात कई प्रकार की कारों में नाचती-गाती दुल्हन के घर की ओर रवाना हो गयी. बारात पहुँचते ही वहाँ धूम मच गई. लोगों को जलपान कराया गया, उसके बाद शहनाई पर कई धुनें दोहराई गईं. रचना एक कमरे में दुल्हन बनी सिमट कर बैठी थी. बारात का सारा काम घर की मुख्य नौकरानी ने सम्भाला था. जब-जब शहनाई की धुन

रचना के कानों में पड़ती वह बेसुध-सी हो जाती. उसे ऐसे प्रतीत होता कि किशन के प्रेम-रस का माधुर्य, शहनाई से निकल कर उसके हृदय में समाया जा रहा हो—उसकी आंखें मदमस्त और कभी-कभी स्वयं ही मुस्करा देती.

उफ ! कितनी अछूती प्रेम की मीठी-मीठी धुन है. उसकी कल्पना में किशन का रूप छा जाता. कुछ ही समय के बाद पण्डितों ने लग्न का मुहूर्त निकाल दिया. रचना को धीरे-धीरे तीन चार स्त्रियां लग्न-मण्डप तक लाईं—फिर दोनों को शपथ-ग्रहण करवाई···उसके पश्चात् दुल्हन को वापिस कमरे में भेज दिया गया. शादी का ब्योरा ही कुछ ऐसा निश्चित किया था कि आज के ही दिन सब कार्यक्रम समाप्त करना था. थोड़ी देर में दुल्हन विदा होने का समय आया. दो तीन औरतें फिर कन्धे का सहारा दिये रचना को धीरे-धीरे ले जा रही थीं. रचना ने घूंघट निकाला था और भली-भांति देख न पा रही थी कि उसके कदम कहां पड़ रहे हैं: औरतों के हाथ का स्पर्श वह अपने बाहुपाश में महसूस करती.गहरे विचारों में डूबी सोचती जा रही थी कि यदि आज उसकी मां जिन्दा होती, चाहे वह कुछ भी क्यों न थी, तो उसके दिल में बेटी की शादी पर कितनी प्रसन्नता और बिदाई की घड़ी में कितना मोह होता. अगर किशन की मां भी जिन्दा होती तो दुल्हन की आरती उतारती.

ऐसे विचार आते ही रचना की आंखें सजल हो गईं और मुंह से सिसकी निकल गई. यह सुनकर साथ वाली एक औरत ने मुस्कराते हुए कहा—"क्यूं दुल्हन रानी, अपने मन के मीत के साथ जा रही हो, इसमें रोने की क्या जरूरत और आज रात को वापिस भी इसी कमरे मे पहुंच जाओगी. चिन्ता न करो हम कमरे को खूब सजा रखेंगी." यह सुन बाकी औरतें भी हंस पड़ीं, परन्तु कोई किसी के मन की गहराई क्या जानें. रचना चुपचाप चलती गई. बरामदा लोगों से भरा पड़ा था. बैण्ड-बाजे की धुन जोर से बज रही थी, फिर कुछ दूर पहुंच कर रचना को फूलों से सजी कार पर बिठा दिया, साथ में किशन को भी बैठने का आग्रह किया गया. रचना गुमसुम-सी घूंघट में लिपटी शर्माये जा रही थी. कार धीरे-धीरे चल दी, उसके पीछे कई कारें आने लगीं. आगे बैण्ड पार्टी और कुछ लोग

नाचते जा रहे थे.

कुछ समय पश्चात् बारात स्कूल पहुँच गई. वहाँ फिर खाने-पीने का प्रबन्ध आरम्भ हो गया. गरीबों में पैसे, मिठाई, वस्त्र व अन्य कई चीजें रचना के हाथ से दिलवाई गईं. सभी लोग प्रसन्नचित्त लौटते जा रहे थे.

देखते ही देखते रात का अन्धेरा छाने लगा. रचना एक कमरे में अपनी नौकरानी व कुछ लडकियों के साथ बैठी थी. रात बढ़ती गई और अन्धेरा छाने लगा. दुल्हन की वापसी का प्रस्ताव स्कूल के उपाध्यक्ष ने रखते हुए कहा—"भाई किशन, इस खूबसूरत रात की कीमती घड़ियाँ गुजरती जा रही हैं. मेरा ख्याल अब···"

रचना को नौकरानी के साथ कार में बिठा कर वापिस भेज दिया गया. घर पहुँचते ही उसको अपने सोने के कमरे मे पहुँचाया गया. कमरा बहुत ही सुसज्जित था. कमरे के चारों तरफ फूल बिखरे थे. धीमी-धीमी मधुर रोशनी कई रंगों मे चमक रही थी. कमरे के मध्य तक बहुत बड़ा पलंग लगा था जो कि फूल-मालाओं से चारों तरफ से घिरा था. कमरे में धीमी-धीमी सुगन्ध उठ रही थी. कमरे का वातावरण बहुत ही मनमोहक और वैभवपूर्ण था. खिडकी के झरोखों से मन्द-मन्द पवन चल रही थी. पलंग के पास ही एक मेज था जिसपर कई प्रकार के फल पड़े थे, सोम रस की दो-तीन बोतलें भी सुसज्जित थी. रचना को नौकरानी ने पलग पर बिठा दिया और जल्दी से दरवाजा बन्द करती हुई बोली—"मालकिन, कुछ फल खा लो, कल शाम से आपने कुछ भी न खाया है."

नौकरानी ने एक सेब काटकर व अंगूरों का गुच्छा प्लेट मे रख दिया और पलंग के करीब बैठ कर रचना के हाथ मे प्लेट थमा दी. रचना ने थोड़ा घूंघट उठाया और धीरे-धीरे फल खाना आरम्भ कर दिया—रचना का मुख बहुत ही आकर्षक लग रहा था, मानों कोई अति सुन्दर स्वप्नपरी हो. जरा-सी आहट होते ही रचना की नजर इधर-उधर दौड़ जाती थी. नौकरानी ने उसके भाव को समझते हुए कहा—"मालकिन, अभी नहीं आएँगे बाबू जी—आप जल्दी से खा लो और फिर आराम करो—मुझे भी और काम निपटाने हैं."

कुछ समय बाद नौकरानी चली गई और दरवाजे को आधा खुला

रहने दिया. अब रचना अकेली रह गई. वह गठर-सी बनी बैठी थी. उसने हाथ घुटनों पर और सिर हथेली पर टिका दिया और टाँगों को थोड़ा-सा सरका दिया. वह विचारधारा में खो-सी गई, पाँव के दोनों अँगूठों को धीरे-धीरे हिलाती और कभी आँखें मूँद लेती, तो कभी खोल-सी लेती. उसका अंग-अंग लहरा रहा था. हृदय में एक अनोखी गुदगुदी पैदा होती. रचना अपने बीते जीवन के विचार में डूब गई. एक समय था, उसने दुल्हन बनने का स्वप्न देखा, परन्तु स्वप्न अधूरा रह गया. उसकी प्रेम-माला टूट कर बिखर गई. फिर उसने यूँ ही जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा की, पर वक्त की लहर, भाग्य की नैया ने आज उसे फिर किनारे को सौंप दिया. कभी सोचा न था, वह हो गया. आज वह दुल्हन बनी बैठी पिया के इन्तजार की घड़ियाँ गिन रही थी. यह स्वप्न नहीं, पर सत्यता थी. आज वह किसी की अर्धांगिनी है. नारी इस मिलन की रात के सहारे किस प्रकार जीवन का हर कष्ट सहते हुए भी स्वप्नों के मधुर मिलन में खोई रहती है. सुहागरात उसके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण रात है. वह किसी एक पुरुष को अपना सर्वस्व मानकर, अपना सबकुछ उसे सौंपकर अपने को भाग्यशाली मानती है. रचना भी आज अपने को विश्व-भर में भाग्यशाली मान रही थी, वह किसी मर्द की मजबूत बाहों के घेरे में सुरक्षित है—एक ऐसा प्रीतम जिसे वह मन की आँखों में बिछाकर पूजने लगी थी—नारी की सबसे बड़ी विजय उसको मनचाहा साजन मिल जाना है, और वह आज रचना को प्राप्त हो चुका था.

रचना वैसे ही दबी हुई इन्तजार की घड़ियाँ व्यतीत कर रही थी. जब जरा-सी आहट होती तो उसकी नजर जल्दी से इधर-उधर दौड़ जाती. इन्तजार भी कितना मधुर अनुभव है, कितनी बेचैन कटु सत्यता है. इन्तजार के घनघोर बादलों की छटा हृदय के बदन पर बूंद-बूंद बरस कर एक अनोखा उन्माद उत्पन्न करती है, इन्तजार एक ऐसा सहयोगी है जिसकी आशा अमर है और इन्तजार में बीतता एक-एक पल याद की सुनहरी मंजिल बन जाती है. रचना का पल-पल उस पर ऐसा बोझ डालता जा रहा था कि बोझ से लदी वह कल्पना-भरी यादों में मदमस्त हुई जा रही थी. रचना की नजर उस चित्रकारी पर पड़ी जो उनकी सगाई के

दिन भेंट की गई थी. चित्रकारी में कितना दर्द, प्रेम, स्नेह और ममता थी. उसकी दृष्टि बच्चे की रूपरेखा पर जमी थी, पल-भर के लिए उसे ऐसा प्रतीत हुआ, यह चित्र नहीं बल्कि स्वयं बैठी और बच्चे को गोदी में लिये देख रही हो—उसके हृदय में ममता जाग उठी.

कार का हार्न बजा, वह एकदम चौंक उठी. उसकी विचार-माला टूट गई. बरामदे में कुछ बातचीत की आवाज आ रही थी, फिर किशन की पदचाप सुनाई दी. बाहर किशन और उपाध्यक्ष बातें करते-करते बरामदे के किनारे तक पहुँचे थे. उपाध्यक्ष बोला—"अच्छा किशन, मेरी सरहद खत्म होती है—मैं वापिस जाने को कहूँगा." किशन ने कहा—"ठीक, जैसे आपकी मर्जी." उपाध्यक्ष पीछे मुड़ा और ओवर कोट की जेब में उसका हाथ पहुँचा, तो जेब में पड़ा पत्र देखकर उसने मुड़ कर देखा और बोला—"हैलो किशन, दो बातें तो भूल ही गया—पहली बात, यह कल शाम आप के नाम रजिस्टर्ड खत कहीं विदेश से आया है, ओवर कोट की जेब में रखा, देना भूल गया—अभी जब हाथ पड़ा तो याद आई···आई एम सौरी फार दिस···दूसरी बात··· आई विश यू आल दी बैस्ट यंगमैन···ओ के गुडनाइट." यह कहते हुए उपाध्यक्ष चला गया.

किशन की नजर जब लिफाफे पर पड़ी तो एडरस लिखा देख कर यूँ महसूस हुआ कि लिखावट जानी-पहचानी है. उसने लिफाफा खोला, एक कागज में फूल, जो कि सूख चुका था, किशन के हाथ में गिरते-गिरते थम गया. किशन ने जब फूल देखा तो पल-भर के लिए सुन्न-सा हो गया, जैसे उसके कदमो तले की जमीन फिसल गई हो···यह क्या, यह तो वही फूल है जो कभी उसने सुभाषनी को भेंट किया था—फिर दूसरा कागज निकाला, उसमें कुछ लिखा था—आज पहली बार एक अर्से के बाद सुभाषनी का पत्र आया था, उसके मुँह पर कई रंग उतर व चढ़ गये···उसे यूँ महसूस हुआ जैसे वह चक्कर खाकर गिर पड़ेगा. सुभाषनी का खत···क्या लिखा होगा···अब जो भी लिखा होगा उसकी पहुँच से बाहर है···वह उस दुनिया से गिरता-सम्भलता एक ऐसे किनारे पर पहुँच चुका है, जहाँ से मुड़ कर आना अब मुश्किल ही नहीं, असम्भव भी हो चुका है. वह चाहता था कि पत्र के पुर्जे-पुर्जे करके फेंक दे, परन्तु फिर भी न-जाने उसके मन

में क्या बात आई और पत्र को बरामदे में जली बत्ती की लौ में पढ़ने लगा.

किशन,

इतने अर्से के बाद मेरा खत पाकर शायद आप परेशान, हैरान व सोच में पड़ जाएँगे कि क्यूँ लिखा होगा यह खत. खैर पत्र तो आपको देर बाद डाला, इसमें कोई शक नहीं, परन्तु कारण जाहिर करने से पहले मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ — आपकी क्षमा मेरी आत्मा को चैन का वरदान होगा.

शायद आपको विश्वास आये या न आये, पर आपके बारे में मैं, हर बात जानती हूँ···क्योंकि आप संसार-भर के प्रसिद्ध चित्रकार जो बन चुके हैं. मेरी कल्पना सम्पूर्ण हो गई है, मुझे इस बात की इतनी खुशी है कि अल्फाज में जाहिर करना असम्भव है. आपकी कला की तारीफ एशिया, योरुप के सभी चित्रकला-पत्रों विज्ञापनों में पढ़ मैं अभी भी झूम उठती हूँ जैसे मुझे मेरी मुरादों का महल मिल गया हो. इस बार एक और ही दिल खुश समाचार पढ़ कर और भी अधिक प्रसन्नता हुई कि आपकी शादी एक प्रसिद्ध चित्रकार, मूर्तिकार रचना से हो रही है···मेरी शुभकामनाएँ!

किशन, इस बात से आगे वाला पत्र का भाग करीब एक घण्टे बाद लिख रही हूँ क्योंकि मेरा मुन्ना अचानक नींद से जाग पडा, उसे फिर सुला के आई हूँ—तो इस बात से जाहिर है, मैं शादी-शुदा हूँ. हाँ किशन, मेरी शादी करीब डेढ़ साल पहले हो चुकी है. मेरे पिता की जीत और मेरी हार, दूसरे शब्दों में नारी की विवशता की पराजय, सासारिक झूठे रस्मो-रिवाज की जीत—नारी कितनी निर्बल है कि पानी के बहते बहाव की भाँति जहाँ डाल दो ढल गई—किशन, मेरे हाथ-पाँव मजबूरी की उन कड़ियों में बँधे थे कि मैं नहीं छुड़ा सकी—अपनी हार अपने जीवन के अरमानों को अपने हाथ से फूँकने के अलावा चारा न था···खैर छोड़ो, अपनी कहानी सुनाकर क्या करूँगी, आपकी शादी के समाचार से मेरे दिल का एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया है, वह बोझ आप स्वयं समझ लें.

आपके अनमोल प्यार की निशानी, एक पवित्र फूल, जिसमें कई भाव-नाएँ छुपी थीं, वापस कर रही हूँ···इसलिए नहीं कि मेरे हृदय में ईर्ष्या

या घृणा···पर मैं इस काबिल नहीं···वह नारी धन्य है जो कि आपको अपने सपनों के रूप का देवता साकार कर चुकी···बस हर तरफ से केवल आपके योग्य ही नहीं बल्कि आपकी तरह गुणवान भी है···नारी के रूप में एक पक्के इरादे का स्तम्भ; मैं उसके बारे में काफी जानकारी रखती हूँ.

ज्यादा न लिखूँगी क्योंकि अब अलग-अलग राहों के पथिक जो बन चुके हैं.

'सुभाषनी'.

रचना आवाज सुन कर घूँघट में छुई-मुई-सी समा गई. उसकी हृदय-गति तीव्र हो गई. आँखों में प्रेम की गहराइयाँ लहराने लगी. चेहरा सुर्ख हो गया, होंठ फड़फड़ा उठे. अब कोई आकर उसके घूँघट को धीरे-से उठाएगा — ओह कितनी सुहावनी घड़ी होगी वह, काश ! ये घड़ी उमर-भर के लिए थम सकती···एक दुल्हन के रंग-भरे सपने, उम्र-भर की प्रेम-प्यास बुझेगी···सपने साकार होंगे.

खत पढने के बाद किशन के दिल का जैसे कोई बोझ उतर गया हो···उसका चेहरा कुछ गम्भीर तो कुछ शून्य-सा प्रतीत हो रहा था···फिर वह धीरे-से स्वयं में मुस्करा उठा और उसके होठों से शब्द निकले··· "सुभाषनी···तुम किश्ती में झूमती-लहराती किनारे से मिली···हम डूब कर उभरे और किनारे ने थाम लिया···खैर तुमको भी जिन्दगी की हसीन महफिल मिल गई, और हमें जिन्दा रहने का सहारा."

उसने फिर जेब से लाईटर निकाला और पत्र को एक किनारे से जलाना आरम्भ किया···देखते ही देखते सारा पत्र जल गया और राख जमीन पर गिर गई. किशन ने कहा···लो एक दास्ताँ खत्म कर दी, मैंने या वक्त के बदलते मिजाज ने···गमे बशर हयात को चाहे तो स्याह कर दे वक्त, या दे दे दुआएँ हसरत-भरी वक्त···है मकसद मेरे बारे क्या, समझ आता नहीं." एक हवा का झोंका आया, राख को समेट कर उड़ा ले गया. किशन की आँखें राख हुए पुर्जों को देर तक देखती रहीं.

किशन पीछे मुड़ा और धीरे-धीरे आगे बढ़ चला. उसके कदमों की आवाज रात के सन्नाटे में रचना के कानों में, एक जीवन का मधुर राग

सुना रही थी. किशन ने धीरे-से दरवाजा खोला और फिर उसे बन्द कर दिया. उसकी नजर रचना पर पड़ी जो कि पलंग पर घूंघट में छुपी थी··· वह उसके करीब पहुँचा. किशन के हाथ बढ़े और धीरे-से घूंघट का पट बदल दिया. रचना का सुन्दर मुखड़ा जैसे बदली में छुपा चाँद बाहर आ गया हो···रचना की आँखें बन्द थीं···इतना सौन्दर्य कि जैसे किसी कवि की कविता, लेखक की कल्पना···आप रचना सातवें आसमान की परी हो —"जरा आँखें खोलो, मुझसे तुम्हारा ये सारा रूप अपने कमजोर हाथों में सम्भाला न जाएगा." किशन ने रचना का चेहरा अपने हाथों मेंथामते हुए कहा. रचना ने धीरे-से अपनी आँखें खोलीं, दोनों की नजर एक-दूसरे सेटकराईं और बेसुध दोनों एक-दूसरे को देखते रहे. कुछ समय बाद किशन के होंठ धीरे-से हिले—"रचना, मैं अपना बिखरा हुआ सब प्यार वापस करना चाहता हूँ"···

धीरे-से उसने वही मुरझाया-सा गुलाब परन्तु प्रेम की एक अमूल्य भेंट रचना के बालों में टाँग दी···कितना रसीला मदमस्त स्पर्श था, दोनों जैसे सरूर के पैमाने में ढले जा रहे थे. किशन ने कहा···"रचना ये वो फूल जो कभी···" अभी बात पूरी न हुई थी कि रचना ने किशन के मुँह पर हाथ रख दिया···"मैं जान गई किशन,—आज की रात आपके होंठों से मेरे सिवा कोई नाम न आए." किशन ने रचना के हाथ को अपने हाथ में ले लिया और अपना सिर झुका कर मेहन्दी से रंगा हाथ चूम लिया, रचना के बदन में जैसे बिजली दौड़ गई हो, उसके नेत्र आनन्द से आधे बन्द-से हो गए—फिर दोनों के बीच इतना कम फासला हो गया कि एक-दूसरे की गर्म साँसों की आवाज सुनाई देने लगी. किशन तनिक-सा झुका और उसकी आँखों को चूम लिया और धीरे-से बोला —"रचना, मुझे अपने नयनों में छुपाए रखना सदा के लिए"

रचना चुप थी, किशन ने रचना को बाहों के घेरे में कस लिया और फिर दोनों के चेहरे बिल्कुल करीब हो गए. दोनों की साँसें आपस में टकराईं और प्यासे होंठ एक-दूसरे से बेल की भाँति लिपट गए, मधुर रस पीने के लिए···

रचना किशन के वक्षस्थल से सिमट गई और किशन ने मजबूती से अपनी बाहों में उसे सदा-सदा के लिए थाम लिया.

०००